

प्राचीन सांस्कृतिक साहित्य के प्रमुख प्रकाशक

खेमराज श्रीकृष्णदास

११/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, ७ वी खेतवाडी बँक रोड कॉर्नर,
मुंबई - ४००००४.

एवं

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस, अहिल्याबाई चौक, कल्याण,
जि. ठाणे (महाराष्ट्र).

(संस्थापित : १८७१)

द्वारा प्रकाशित

वर्तमान प्राप्य पुस्तकों का सूचीपत्र

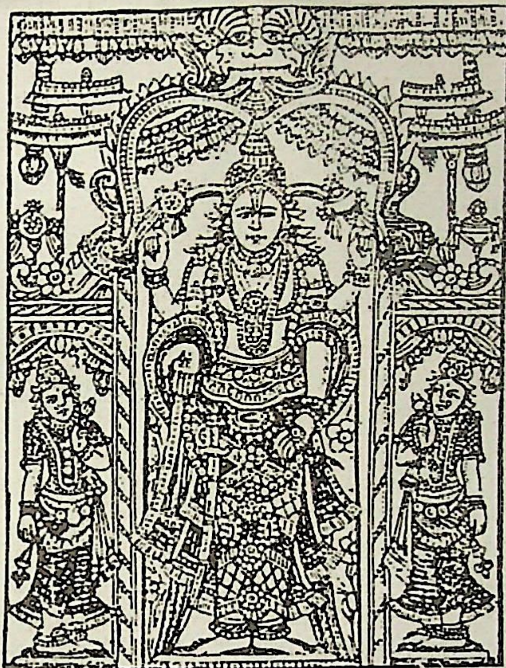
सूचीपत्र - फरवरी २०२०

वैदिक ग्रन्थ | वेदान्त ग्रन्थ | धर्मशास्त्र ग्रन्थ | कर्मकाण्ड ग्रन्थ | अष्टादश महापुराण | उप-पुराण | माहात्म्यादि ग्रन्थ | रामायणादि ग्रन्थ | इतिहास ग्रन्थ | वैद्यक ग्रन्थ | ज्योतिष ग्रन्थ | मन्त्र शास्त्र ग्रन्थ | कबीरपन्थी ग्रन्थ | स्तोत्र ग्रन्थ

प्रेस : खेमराज श्रीकृष्णदास, २२, चिंतामणी इण्डस्ट्रियल इस्टेट, रामटेकडी, पुणे ४११ ०१३


संस्थापक-द्वय
सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेशो विजयते



आपकी ही असीम अनुकम्पा से आज एकसौ पैंतालीस वर्षों से यह संस्थान सत्साहित्य प्रकाशन कार्य में संलग्न है। भगवच्चरणारविन्दों में सादर भावाञ्जलि समर्पित करते हुए विनम्र प्रार्थना है, कि हम अपने पुनीत उद्देश्यों के लिये सतत प्रयत्नशील बने रहकर निरंतर प्रगति की ओर होते हुए सदैव जनता का अनुराग प्राप्त करते हुए व माँ सरस्वती की सेवा करते रहे।

ग्राहकों के लिए अत्यावश्यक सूचना

कृपया इसको अवश्य पढिये।

पांचसौ रुपये अथवा अधिक सूचीमूल्य की पुस्तकें मुंबई व कल्याण से मंगाने पर डाक-खर्च मुफ्त रहेगा।

पांचसौ रुपये से कम की पुस्तकें मंगाने पर मनीऑर्डर कमीशन के अलावा डाक-खर्च भी ग्राहक को देना होगा। सूची-पत्र में उल्लेखित सभी पुस्तकों पर (नेट मूल्य कि पुस्तकों को छोडकर) दो हजार या इससे अधिक सूची मूल्य की पुस्तकें मंगाने पर १०% छूट दी जाएगी।

कागज के निरन्तर बढते मूल्य के कारण हमें भी पुस्तकों का मूल्य जब कभी बढाने पर बाध्य होना पडता है। अतः आपका आर्डर मिलने पर आर्डर की पुस्तक का डिस्पेज के समय जो मूल्य होगा, वही आपसे लिया जायेगा। कृपया इसकी जानकारी लेवें। पार्सल के ऊपर बीजक लिखा रहेगा। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि हमारी विवशता को समझते हुए आपकी कृपा व सहयोग सदैव की भाँति इस संस्थान को सुलभ रहेगा।

इस सूची- पत्र में जिन पुस्तकों के सामने मूल्य नहीं लिखा है, वे इस समय समाप्त हैं।

– व्यवस्थापक

कृपालु ग्राहकों से नम्र निवेदन

(१) नोट, हुडी व पोस्ट टिकटें रजिस्ट्री से तथा सादी चिट्ठिया नीचे के पते से भेजें।

(२) पत्र में मुकाम, पोस्ट, जिला, नाम और ठिकाना साफ लिखें। पूरा पता नहीं लिखने पर पुस्तकें तथा जबाब नहीं भेजा जा सकेगा।

(३) रेल द्वारा माल मंगाना हो तो ५०० रु. अग्रिम भेजकर स्टेशन के नाम सहित पत्र लिखें।

(४) पत्र बैरंग मत भेजिये। बैरंग पत्र नही लिये जायेंगे।

(५) पत्र हिन्दी अथवा अंग्रेजी में स्पष्ट लिखे होने चाहिये, अथवा कार्यवाही करने में विलंब की सभावना है।

(६) सूचीपत्र के लिए ४ रुपये के टिकट आने पर बिना मूल्य भेजा जायेगा।

(७) आर्डर के अनुसार वी.पी से अपने डाकघर में आये हुये पैकट का दाम चुकाकर घर बैठे चाहे जहां मनमानी पुस्तकें मंगा सकते हैं।

(८) 'भारत वर्ष' के बाहर दूसरे देशों में जहां पुस्तक वी.पी. द्वारा नहीं जाती वहां के महानुभावों को डाकव्यय सहित पुस्तकों का मूल्य चेक, मनीआर्डर, पोस्टल आर्डर अथवा जैसे उनको सुगम पडे, आर्डर के साथ प्रथम ही भेज देना चाहिये, अन्यथा माल नहीं भेजा जा सकेगा।

(९) वी.पी. द्वारा आये हुए पार्सल को डाकघर पांच दिन से अधिक डिपाजिट नहीं रखेगा। ग्राहकों के सुभीते के लिये बीजक पार्सल के ऊपर ही लिख दिया जाता है। वी.पी. पार्सल पर लिखी हुई कीमत व उतनी रकम का मनीआर्डर कमीशन ग्राहकों से डाक वाले लेंगे।

(१०) ग्राहकों को किसी प्रकार का संदेह हो तो पोस्ट मास्टर को कहकर उसके सामने पार्सल खोलकर अपना सदेह मिटा सकते हैं।

(११) किसी प्रकार की भूल भी हो तो ग्राहकों से प्रार्थना है कि पार्सल अवश्य छुडवा लेवें, क्योंकि ५ दिन की छोटी अवधि में पत्र व्यवहार से भूल नहीं सुधर सकती। अतः पार्सल अवश्य छुडा लेवें और भूल के लिये पत्र-व्यवहार करें। पत्र पहुँचते ही उनका समाधान पूर्ण रूप से कर दिया जायगा।

(१२) कोई ग्राहक पार्सल को वापस कर देंगे तो पार्सल के जाने आने में व पुस्तक की जो हानि होगी, वह उन्हे देनी पडेगी।

(१३) एक दफे बिक्री की हुई पुस्तक वापस नहीं ली जायगी। यदि किसी पुस्तक में न्यूनाधिक पत्र हों, तो पुस्तक का पूरा नाम न्यूनाधिक पत्रों के नम्बर सहित लिखें। उसे पूरा कर दिया जायगा।

(१४) आर्डर की पुस्तकों में जो तैयार होगी, भेजी जाकर बाकी का आर्डर कैन्सिल हो जायगा। कभी पुस्तक स्टाक में तैयार न रहने कारण माल भेजने मे कुछ विलंब भी हो सकता है। कृपया ग्राहकगण क्षमा करें।

(१५) कृपया बैंक ड्राफ्ट या चेक भेजना हो तो मुम्बई स्थित किसी बैंक का **खेमराज श्रीकृष्णदास** के नाम का भिजवावें।

कृपाभिलाषी

खेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

टेलिफोन/फॅक्स : ०२२-२३८५७४५६

खेमराज श्रीकृष्णदास

६६ हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट, पुणे - ४११ ०१३.

दूरभाष : ०२०-२६८७१०२५

Web Site : http //www.khe-shri.com. Email : khemraj@vsnl.com

विषय सूची

सूचीपत्र में विषयानुसार अकारादि क्रम से दी गई हैं

नक्कालों से सावधान -

हमारे यहां की पुस्तकों की अत्यधिक बिक्री व मांग को देखकर कई प्रकाशकों ने हमारे उल्टे सीधे नामों से पुस्तकें छापकर हमारे प्रिय ग्राहकों को ठगने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर रखी है। कृपया हमारे प्रकाशन को खरीदते समय हमारा नाम व पता बराबर देखकर ही पुस्तकें खरीदे।

श्रीवेंकटेश्वराय नमः

बृहत्-सूचीपत्र

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य

वैदिक ग्रन्थ

१२	**दण्डकशुक्लयजुर्वेदीय**- मूलमात्र। संस्कृत में। पत्राकार -	५०.००
१५	**पितृसंहिता**- श्राद्धादिकों में ब्राह्मणभोजन के समय पाठ करने योग्य। संस्कृत में	२०.००
१६	**पञ्चसूक्त**- मूल- (तैतरीय) नित्य पाठोपयोगी, संस्कृत में।	८.००
१७	**पुरुषसूक्तादि पञ्चसूक्त**- (माध्यंदिनीय) मूल संस्कृत में, नित्य पाठोपयोगी।	५.००
२४	**रुद्रीशुक्लयजुर्वेदी**- मूल षड्ङ्गन्यास सहित। संस्कृत में।	५०.००
२५	**रुद्राष्टाध्यायी**- स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत संस्कृतभाष्य व अत्युत्तम हिन्दी टीका सहित।	१००.००
२६	**वेदभारती**- ऋग्वेद के २० चुने हुए मन्त्र हिन्दी व अंग्रेजी टीका सहित।	१०.००
२८	**शतपथब्राह्मण**- सायणभाष्य तथा टिप्पणी सहित प्रथमकाण्ड। संस्कृत में।	२००.००
३२	**शुक्लयजुर्वेद (वाजसनेयी) संहिता**- मूल -संस्कृत में। संपूर्ण कर्मकाण्डादि में अत्यंत उपयोगी। सर्वानुक्रमणिका, अनुवाकप्रतिज्ञासूत्र, याज्ञवल्क्यशिक्षा, स्वरसहित आकारादि क्रम से मन्त्रानुक्रमणिका सहित, स्थूलाक्षरों में- पत्राकार -	४००.००
३३	उपरोक्त **शुक्लयजुर्वेद (वाजसनेयी) संहिता**- मूल - संस्कृत में। सजिल्द-	४५०.००

वेदान्त ग्रन्थ

३८	**अपरोक्षानुभूति**- (श्री शंकराचार्यजी कृत) स्वामी श्री विद्यारण्यमुनि कृत दीपिका नामक संस्कृत टीका तथा श्री. पं. रामस्वरूपजी कृत हिन्दी टीका सहित।	-
४०	**अवधूतगीता**- (काशीनिवासी स्वामी परमानंदजी कृत हिन्दी टीका सहित) इसमें दत्तात्रेयजी का वृत्तान्त भी दिया गया है और श्लोकों का पदच्छेद करके प्रत्येक पद का पृथक् अर्थ बताया गया है।	२००.००
४१	**अष्टावक्रगीता**- (श्री अष्टावक्रमुनि प्रणीत) सान्वय हिन्दी टीका सहित, ब्रह्मविद्या जानने का अति सरल सुगमोपाय।	१३०.००
४३	**आत्मबोध**- हिन्दी टीका सहित।	४०.००
४५	**गणेशगीता**- (गणेशपुराणान्तर्गत) स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित।	६०.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
४७	**जीवनमुक्तगीता-** हिन्दी टीका सहित।	५.००
४९	**तत्त्वबोध-** हिन्दी टीका सहित । वेदान्त की प्रथम श्रेणी का सर्वोत्तम ग्रन्थ।	३०.००
५१	**देवीगीता-** (देवीभागवतान्तर्गत) स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। नित्य पाठ करने योग्य ।	
५७	**पञ्चदशी-** पं. मिहिरचंद्रजी कृत अत्युत्तम हिन्दी टीका सहित । इस में पञ्चतत्त्वविवेक, भूतविवेक, महावाक्यविवेक, कूटस्थदीप, नाटकदीप, योगानंद, आत्मानंद, अद्वैतानंद, विद्यानंद, विषयानंद आदि वेदान्तमार्ग बहुत सुंदर ढंग से बताये गये हैं ।	२००.००
७३	**भगवद्गीता- (अमृत तरंगिणी)** पं. रघुनाथदासजी कृत हिन्दी टीका सहित। बड़े अक्षरों में ।	१००.००
८९	**भगवद्गीता-** मूल – अत्यंत छोटा (लंबाई १ इंच,चौडाई ३/४ इंच, मोटाई १/४ इंच) यह गीताप्रेमियों के लिये सदैव पास में रखने योग्य है ।	५०.००
९८	**भक्तिदर्शन-** महर्षि शाण्डिल्यजी प्रणीत निगमागमी हिन्दी भाष्य सहित । इसमें भक्ति विषयक सभी बातों का वर्णन है ।	
११४	**वेदान्तपरिभाषा-** शिखामणि और मणिप्रभानामक संस्कृत टीकाद्वय सहित।	८०.००
११६	**वेदान्तपरिभाषा-** अर्थ दीपिका नामक संस्कृत टीका सहित।	
११७	**वेदान्तसार-** संस्कृत मूल, संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित। संस्कृत टीकाकार परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीनृसिंहसरस्वती, हिन्दी टीकाकार पंडित श्रीरामस्वरूपजी।	३०.००
१२७	**शिवगीता-** (पद्मपुराणोक्त १६ अध्यायों में भगवान् श्रीरामचन्द्रजी को शिवजी द्वारा ज्ञानोपदेश) स्व. वि. वा. पं.ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित।	१००.००
१३०	**ज्ञानभैषज्यमञ्जरी-** ज्ञानसम्पन्न भिषग्राज गुमानि प्रणीत। इसमें रोगों पर एक-एक औषधि का वेदान्त मतानुसार वर्णन है। (जीर्ण)	

वेदान्त ग्रन्थ केवल हिन्दी में

१३२	**अध्यात्मविनोद-** पं.गङ्गाधरजी वर्मा संग्रहीत। इसमें योगाभ्यास, मेस्मेरिजम् और वेदान्तादि विषय हैं ।	१२.००
१३३	**अध्यात्मप्रकाश-** (श्रीशुकदेवजी प्रणीत) वेदान्त का अपूर्व ग्रन्थ ।	१०.००
१३४	**अनुभवप्रकाश-** (मारवाडी भाषा में) योगेश्वर श्री १०८ बनानाथजी कृत। इसमें गुरु की महिमा, योगी की प्रशंसा, सन्तों का प्रभाव, मन को चेतावनी, वेदान्त के पद, तत्त्वमस्यादि वाक्यों का सार अनेक रागों में वर्णित है ।	१००.००
१३६	**अर्जुनगीता-** श्रीकृष्णजी और अर्जुन का संवाद ।	२०.००
१३८	**आत्मरामायण-** (हिन्दी में) सातों काण्ड । रामायण का वेदान्त पक्ष ।	२५.००
१३९	**आनन्दामृतवर्षिणी-** (आनन्दगिरीस्वामी कृत)गीता के कठिन शब्दो का प्रतिपादन	३५.००
१४४	**गर्भगीता-** (हिन्दी में) श्रीकृष्णार्जुन संवाद।	१०.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
१४८	**गुरुगीता भाषा व्याख्या**– (स्कन्धपुराणान्तर्गत) गुरुगीता की टीका श्लोकांक लगाकर हिन्दी में लिखी गई है।	२०.००
१५५	**तत्त्वानुसंधान**– अर्थात् "अद्वैत चिन्ताकौस्तुभ"। (हिन्दी में) श्रीपरमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी चिद्घानानन्दजी कृत। इसको आदि से अंत तक भली पकार देख लेने पर वेदान्त के छोटे–बडे ग्रन्थ सरलता से समझ में आ जाते हैं।	२००.००
१५८	**पक्षपातरहितअनुभवप्रकाश**– बाबा कमलीवाले विशुद्धानन्दजी कृत। इसमें चारों वेद, षट्शास्त्रों का सार और अठारहों पुराणों की कथा आदि का अध्यात्मविद्यापरक अर्थ लिखा गया है।	३५०.००
१७२	**योगवासिष्ठ**– (हिन्दी गद्य में) छहों प्रकरण संपूर्ण। दो जिल्दों में। संस्कृत व हिन्दी के विशिष्ठ विद्वान् स्व. श्री. पं. हरदत्तजी शर्म्मा शास्त्री, जम्मू काश्मीर निवासी द्वारा सरल, सुगम व परिमार्जित हिन्दी में अनुवादित। महर्षि वाल्मीकीजी द्वारा निर्मित इस ग्रन्थ का गुरु वसिष्ठजी ने श्री रामचन्द्रजी को उपदेश किया है।	१२००.००
१७८	**विचारसागर**– साधु श्रीनिश्चलदासजी तथा ब्रह्मनिष्ठ पं. श्री.पीताम्बरजी कृत, नवीन रूढ़ि युक्त सरल हिन्दी में, आत्मज्ञानोपयोगी।	५००.००
१७९	**विचारचन्द्रोदय**– ब्रह्मनिष्ठ पं. श्री. पीताम्बरजी कृत, उनके जीवनचरित्र और सटीक "श्रुतिषड्लिंग" सहित।	२००.००
१८०	**विचारमाला**– संस्कृत श्लोक, दोहा, टिप्पणी व स्वामी श्रीगोविन्ददासजी कृत, हिन्दी टीका सहित।	
१८३	**वृत्तिप्रभाकर**– स्वामी श्रीनिश्चलदासजी कृत। इस षट्शास्त्र के मत से वेदान्तमत का प्रतिपादन सुंदर ढंग से किया गया है। हिन्दी वार्ता में।	३००.००
१९३	**सारुक्तावली**– (हिन्दी पद्य में) हरदयालजी कृत।	
१९५	**सुन्दरविलास**– दादूपंथी महात्मा सुन्दरदासजी विरचित ज्ञानसमुद्र, ज्ञानविलास, सुन्दराष्टकादि सहित सट्टिप्पण। पद्यमय हिन्दी।	२००.००
१९६	**ज्ञानवैराग्यप्रकाश**– काशी निवासी परमहंस स्वामी परमानन्दजी कृत। इस उपन्यास रूप वेदान्तग्रन्थ के देखने से विषयी पुरुषों का भी चित्त संसार से विरक्त हो जाता है।	१७०.००
१९७	**ज्ञानमाला**– (हिन्दी गद्य में) भगवान् श्रीकृष्णजी और अर्जुन का ज्ञानसंवाद।	४५.००

मीमांसा–योग–सांख्य ग्रन्थ

१९९	**गोरक्षपद्धति**– (योगविद्या के आचार्य गोरखनाथजी द्वारा विरचित) टिहरी–गढवाल निवासी पं. महीधरजी शर्मा कृत हिन्दी टीका सहित।	७०.००
२००	**घेरण्डसंहिता**– (ऋषिवर घेरण्ड योगीश्वर विरचित) श्रीराधाचन्द्रभिषग्विरचित, हिन्दी	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	टीका सहित। इसमें अष्टाङ्गयोग का वर्णन भलीभांति किया गया है।	६०.००
२००ब	**योगदर्शन पातंजली-** मूल (संस्कृत में)	५.००
२०१	**योगदर्शन पातंजली-** मूलसूत्र, दोहा तथा हिन्दी टीका सहित। इसमें अष्टाङ्गयोग निरूपण बहुत ही सरल किया गया है।	९०.००
२०२	**बिन्दुयोग-** (राजयोग का प्रारंभिक ग्रन्थ) स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित।	
२०३	**ब्रह्मज्ञानसागर-** श्री स्वामी चरणदासजी कृत। पद्य में।	५.००
२०५	**भक्तिसागर-** (१७ ग्रन्थ – दोहा, चौपाई, सोरठा आदि रागरागिनियों में) श्रीस्वामी चरणदासजी कृत ब्रजचरित्र, अमरलोक, धर्मजहाज, श्रीअष्टाङ्गयोग, षट्कर्म हठयोग योग सन्देहसागर, सागर, ज्ञानस्वरोदय, हंसनादोपनिषद्, सर्वोपनिषद्, तत्त्वयोगोपनिषद्, योग शिखोपनिषद्, भक्तिपदार्थ मनविकृतकरण, श्रीब्रह्मसागर, शब्दवर्णन और भक्तिसागर परिशिष्ट भाग सहित। (अब रेक्झिन बायडिंग में)	३५०.००
२०९	**बृहद्योगसोपान-** पं. रामनरेशजी मिश्र विरचित। इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि सचित्र अष्टाङ्गयोग का विस्तारपूर्वक वर्णन है। योग के आर्ष ग्रन्थों से गृहीत मूलपाठ और हिन्दी टीका सहित।	८५.००
२१०	**शिवसंहिता-** काशी निवासी गोस्वामी श्रीरामचरणजी पुरी कृत हिन्दी टीका सहित। योगोपदेश, ब्रह्मज्ञान, हठयोग तथा राजयोगादि का वर्णन।	१५०.००
२११	**शिवस्वरोदय-** महामहोपाध्याय पं. मिहिरचन्द्रजी कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें स्वरों और इडा, पिंगला, सुषुम्णा नाडियों से प्रश्नादि और राजयोग, हठ्योग, प्राणायामादि पञ्चतत्त्वों के जानने की विधि वर्णित है।	४५.००
२११ब	**शिवस्वरोदय –** मराठी टीका सहित।	२०.००
२१२	**सर्वदर्शनसंग्रह-** माधवाचार्यजी कृत। (विद्वद्वर्य गोविन्दाचार्यजी कृत, विशद हिन्दी टीका सहित, अत्यन्त परिष्कृत और परिशोधित) इसमें चार्वाक, बौद्ध, आर्हत, रामानुज, पूर्णप्रज्ञ, वा वेदान्त, नकुली, पाशुपत, शैव, प्रत्यभिज्ञा, रसेश्वर, औलुक्य, अक्षपाद, जैमिनी, पाणिनी, सांख्य और पातञ्जल दर्शनों का वर्णन है।	
२१४	**सहजप्रकाश-** श्रीस्वामी चरणदासजी की बहिन सहजोबाई कृत। पद्य में।	२०.००
२१५	**सांख्यदर्शन-**(भगवान् कपिलदेवजी कृत) श्रीप्रभुदयालजी कृत हिन्दी टीका सहित	१००.००
२१८	**हठयोगप्रदीपिका-** (स्वात्माराम योगीन्द्रजी कृत) श्रीयुत ब्रह्मानन्दजी विरचित संस्कृत टीका तथा पं. मिहिरचन्द्रजी कृत हिन्दी टीका सहित। यह इस विषय की एक उत्तम रचना है।	२००.००
२१९	**ज्ञानस्वरोदय-** श्रीस्वामी चरणदासजी कृत। पद्य में।	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य

धर्मशास्त्रग्रन्थ

२४१ **अष्टादशस्मृति**– सर्वधर्म निरूपण युक्त। हिन्दी टीका सहित। ५००.००

२४३ **आह्निककर्मसूत्रावलि**– (मूलमात्र संस्कृत में) श्रीशुक्लयजुर्वेदी माध्यन्दिन वाजसनेयी शाखावालों के लिये परमोपयोगी। ३५०.००

२५० **अशौचनिर्णय**– हिन्दी टीका सहित। १०.००

२५३ **कर्मविपाकसंहिता**– (नक्षत्र चरणगत) हिन्दी टीका सहित। इसमें तीन जन्म का वृत्तान्त मालूम होता है। २००.००

२५५ **कर्मसिद्धान्तदीपिका**– (मूलमात्र) ४२१ श्लोकों में कर्मविपाक का सारांश। -

२७० **दानचन्द्रिका**– (मूलमात्र –संस्कृत में) इसमें सब प्रकार के दान संकल्प है। २००.००

२७३ **धर्मसिन्धु**– श्रीयुत पं. मिहिरचन्द्रजी कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें तीन परिच्छेदों में संक्रान्ति, मास, तिथि आदि का सामान्य निर्णय, चैत्रादि बारहों मासों की तिथिव्रतादि निर्णय, गर्भाधानादि सोलह संस्कारों का विधान आदि, देवप्रतिष्ठादि श्राद्धविचार, अशौच निर्णय आदि समस्त विषय वर्णित है। ६००.००

२७५ **धर्मप्रचार**– (प्रथम भाग) हिन्दी टीका सहित। सामाजिक कुरीतियों का धर्मशास्त्रानुसार खण्डन।

२७९ **धर्मशास्त्रसंग्रह**– बाबू साधूचरणप्रसादजी संग्रहीत। ५९स्मृतियों का सार। सब प्रकार की धार्मिक व्यवस्थाओं के लगाने में यह ग्रन्थ अद्वितीय है।

२८२ **निर्णयसिन्धु**– स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, सरल, सुबोध हिन्दी टीका सहित। इसमें धर्मशास्त्र संबंधी सभी विषयों के निर्णय सप्रमाण लिखे गये हैं, अर्थात् धर्मसिन्धु के समस्त विषय विस्तृत रूप से दिये गये हैं। ८००.००

२८९ **प्रायश्चित्तप्रकाश**– प्रायश्चित्त विषय का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ। कर्मकाण्डाचार्याद्युपाधि–चतुष्टय विभूषित स्व. पं. चतुर्थीलालजी शर्मा विरचित। संस्कृत में। ३०.००

२९३ **ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड**– (बृहज्ज्योतिषार्णवान्तर्गत षष्ठ मिश्रस्कन्धोक्त)– हिन्दी टीका सहित। इसमें पञ्चगौड तथा पञ्चद्राविड आदि प्रायः सभी ब्राह्मणों की उत्पत्ति, गोत्र, प्रवर, शाखा आदि का विवरण और ड़िड्डू माहेश्वरी, लेवा, चड़बा, भाटिया, क्षत्रिय, अग्रवाल वैश्य आदि की उत्पत्ति, वर्ण संकर जातियों का वर्णन, आचार्य प्रादुर्भाव, जैनाचार्य प्रादुर्भाव, श्रावकोत्पत्ति, श्री शंकराचार्य प्रादुर्भाव आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषय हैं। ५००.००

३०५ **व्रतराज**– दैवज्ञकुलभूषण, याज्ञिक शिरोमणि संगमेश्वरोपाह्व श्री विश्वनाथजी शर्मा विरचित। अनेक ग्रन्थों के लेखक रिसर्च स्कॉलर पंडितवर्य्य माधवाचार्यजी संपादित, हिन्दी टीका सहित। व्रत, उत्सव, त्यौहार इनके अर्थ का स्पष्टतया प्रतिपादनकर वर्ष भर के समस्त व्रतों का निर्णय, विधि, उद्यापन और कथाएँ दी गयी हैं। ८००.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
३१९	**सौभाग्यलक्ष्मी**– हिन्दी टीका सहित। इसमें लक्ष्मीदेवी को प्रसन्न करने के लिए अनेक स्तोत्र, कवच व सदाचारों का वर्णन है।	६०.००
३२४	**क्षौरनिर्णय**– तीर्थादि में मुण्डन का निर्णय। हिन्दी टीका सहित।	५.००

कर्मकाण्ड प्रयोगादि ग्रन्थ

३२७	**अन्त्येष्टिश्राद्धकर्मपद्धति**– पं. चातुर्थीलालजी कृत (संस्कृत में)	२००.००
३२९	**उपाकर्मपद्धति**– मूल संस्कृत में–(चातुर्थीलाली) सटिप्पणिका। गौडपण्डित श्रीगङ्गाधर चतुर्थीलालजी शर्मणां संकलिता। साधारण संस्कृत जाननेवाला भी केवल इसी एक पुस्तक से सरलतापूर्वक सांगोपांग "श्रावणीकर्म" करा सकता है।	१२०.००
३३०	**(चातुर्थीलाली) उपनयनपद्धति**– सटिप्पणिका। संस्कृत में। संकलनकर्ता गौडपंडित श्रीगङ्गाधर चतुर्थीलालजी शर्मा। अनेक प्रकार के नवीन आवश्यक विषयों से अलंकृत यह एक ही पुस्तक "यज्ञोपवीत संस्कार" कराने के लिये पर्याप्त है।	१८०.००
३३३	**एकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग**– हिन्दी टीका सहित।	२५.००
३४५	**ग्रहशान्ति**– (शुक्लयजुर्वेदोक्त) हिन्दी टीका सहित। इसमें मातृकास्थापन पूजन. आभ्युदयिक श्राद्धपद्धति और ग्रहशान्ति है। यह यज्ञोपवीत तथा विवाहादि शुभ कर्मों में बहुत उपयोगी है।	१००.००
३४९	**गौडीयश्राद्धप्रकाशमहानिबन्ध**– स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत। (मूलमात्र संस्कृत में) श्राद्धस्वरूप, श्राद्ध में ब्राह्मणलक्षण, महालयादि निर्णय, श्राद्धप्रयोग, क्षयाहश्राद्ध, संकल्पश्राद्ध, हेमश्राद्ध, एकादशाहादिश्राद्ध, मासिकश्राद्ध, मघादिश्राद्ध तथा नान्दी–श्राद्धादि सब श्राद्ध, पितृकर्म संबंधी सभी वैष्णवादि पूजनादिकों का अपूर्व संग्रह।	३५०.००
३५३	**जन्मदिनपूजापद्धति**– (मूल–संस्कृत में) अर्थात् प्रति वर्ष के जन्मदिन में पूजनीय देवों की पूजन विधि।	८.००
३५५	**तुलसीविवाहविधि–(पद्धति)**– स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत, संस्कृत में।	५०.००
३५६	**तुलसीपूजापद्धति**– संस्कृत में।	५.००
३५७	**दवातपूजा**– संस्कृत में।	२.००
३६०	**दशकर्मपद्धति**– हिन्दी टीका सहित। गर्भाधानादि वैदिक संस्कारों के वेद मन्त्रों का अर्थ सरल व सुन्दर हिन्दी भाषा में।	६०.००
३६४	**नवग्रहकाण्डी**– नित्य पूजन विधान पद्धति। वैदिक मन्त्रों की संस्कृत टीका व हिन्दी टीका सहित।	५.००
३६६	**नवग्रहजपविधि**– हिन्दी टीका सहित। नवग्रहशान्ति, नवग्रहध्यान, नवग्रहस्तोत्र और गणपति मन्त्र जपविधि सहित।	५०.००

सूची क्रं.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
३७१	**नारदपञ्चरात्र**–(भारद्वाजसंहिता)– श्री. पं. बाबूलाल शुक्ल शास्त्री एम्. ए. साहित्याचार्य–कालिदास अकादमी शोध विभागाचार्य द्वारा सम्पादित तत्त्वप्रकाशिका अभिनव हिन्दी टीका सहित।	१३०.००
३७१अ	**नारायणबलि**– (मूलमात्र) संस्कृत में।	४५.००
३७२	**नित्यकर्मपद्धति**– बहुत उपयोगी छोटासा ग्रन्थ। संस्कृत में।	२०.००
३७३	**नित्यकर्मप्रयोगमाला**– स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत, नित्यनियम के ६२ विषयों सहित। मूलमात्र संस्कृत में।	२००.००
३७४	**नित्यहवनपद्धति**– सोहनलाल गोयलीय कृत। हिन्दी टीका सहित।	१२.००
३७५	**पञ्चमहायज्ञ**– हिन्दी टीका सहित। इसमें संध्या, तर्पण, नित्यश्राद्ध, बलिवैश्वदेवकर्म तथा प्रायश्चित्तयज्ञ आदि है।	२०.००
३८०	**पार्वणश्राद्धप्रयोग**– कन्यागत सूर्य के अपरपक्ष में महालयश्राद्धप्रयोग। हिन्दी टीका सहित।	३०.००
३८३	**पूजापंकजभास्कर**– केवल संस्कृत में। पांचो देवताओं के वैदिकमन्त्रों से यथोपचार पूजा प्रकरण।	४०.००
३८४	**प्रेतमञ्जरी**– हिन्दी टीका सहित। इसमें वैतरणीदान, प्रेतदाहविधि, दशाहादिश्राद्ध, एकादशाहश्राद्ध, वृषोत्सर्ग, शय्यादानादि सपिंडीश्राद्ध, षोडसमासिकश्राद्ध प्रयोग, त्रयोदशाहपददानादि भली प्रकार दर्शाया है।	५०.००
३८५	**बृहत्कर्मकाण्डसमुच्चय**– पं. दिवाकर संग्रहीत। केवल संस्कृत में। इसमें शान्तिपाठ, दीप, गणपति, वरुण, वसुधारा, मातृका, नवग्रहपूजन, वाग्दान, कन्यादान, गोदान, जन्मोत्सवविधि, पुण्याहवाचन, नीराजन, नान्दीश्राद्ध, षोड़ससंस्कार, चतुर्थीकर्म, घटपद्धति आदि विषय वर्णित है।	१६०.००
३८८	**मंगलाष्टकशाखोच्चार**– विवाह में नीतियुक्त बोलने की रीति। संस्कृत में।	१०.००
३९०	**मूलशान्ति**– मूलनक्षत्र में जन्म का शान्तिप्रयोग। केवल संस्कृत में।	१५.००
३९२	**यज्ञोपवीतपद्धति**– हिन्दी टीका सहित। इसमें यज्ञोपवित का संपूर्ण संस्कार और वेदारंभादि विषय है।	२५.००
३९५	**वरदगणेशपूजा**– संस्कृत में। भाद्रपद शुक्लचतुर्थी का गणेशपूजन प्रयोग	१०.००
३९७	**व्रतोद्यापनप्रकाश**– (मूलमात्र संस्कृत में) स्व. पं. चातुर्थीलालजी कृत। इसमें चैत्रशुक्ल प्रतिपदा से लेकर वर्षभर के संपूर्ण व्रतों की अत्युत्तम पद्धति है। सजिल्द–	२००.००
३९८	**वास्तुप्रतिष्ठासंग्रह**– (केवल संस्कृत में) पं. श्रीरामचन्द्र कृत। वास्तुविषय में अद्वितीय ग्रन्थ। वास्तुप्रतिष्ठाप्रक्रिया, वास्तुशान्तिप्रयोग, भूम्यादि पूजन, विश्वकर्मपूजन, प्रधानमूर्तिस्थापनादि, कुशकंडिकाहवन, प्रवेशविधि, दीप, चुली, उलूखल, मुशल, संधानभाण्ड, जलस्थानपूजन आदि उपयोगी सभी विषय।	६०.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
३९९	**वास्तुशान्तिप्रयोग**– (केवल संस्कृत में) अर्थात् समस्त नूतन मकानों का वैदिक मन्त्रों से शान्तिप्रयोग।	
४०१	**वासिष्ठीहवनपद्धति**– हिन्दी टीका सहित। इसमें कलशादि स्थापन, गणपति पूजन, पुण्याहवाचन, मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध, ग्रहमखादि सुगम रीति से दिये गये है। अतः हवन के लिये अत्युपयोगी है।	७०.००
४०४	**विष्णुपूजनविधि**– हिन्दी टीका सहित। विष्णुपूजा की विधि बहुत उत्तम रीति से दी गयी है।	२०.००
४०५	**वैवाहपद्यावली**– हिन्दी टीका सहित। अर्थात् कन्यापक्ष और वरपक्ष की उत्तमोत्तम काव्य से प्रशंसा विनती में वर्णन की है।	२५.००
४०६	**विवाहसोपांगविधि**– "बालबोधिनी" नामक हिन्दी टीका सहित।	२००.००
४०७	**सुगमविवाहपद्धति**– (गंगाधरी) हिन्दी टीका सहित।	१४०.००
४१२	**शान्तिप्रकाश**– (मूलमात्र, संस्कृत में) स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत। इसमें गणपत्यादि पूजन, पुण्याहवाचन, कलस्थापनादि और विनायकादि ३० शान्तिप्रयोग तथा वास्तुशान्ति प्रयोगादि समन्त्रक है।	१७०.००
४१९	**सर्वदेवप्रतिष्ठाप्रकाश**– (केवल संस्कृत में) स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत। इसमें संपूर्ण देवताओं की सर्वोत्तम प्रतिष्ठाविधि और प्रतिष्ठोपयोगी अनेक प्रकार के कुण्ड, मण्डल, यंत्र आदि के चित्र बनाने तथा रंग पूरने की विधि भी है। यह ग्रन्थ कर्मकाण्डियों को परमोपयोगी है।	२७०.००
४२०	**सकामशिवपूजनविधान**–वैदिक, तांत्रिकमंत्रों से शिवपूजन। हिन्दी टीका सहित।	२०.००
४२३	**स्वस्तिवाचन**– (पुण्याहवाचन)– संस्कृत में। प्रायः समस्त शुभकार्यो में पढ़ा जाता है।	५.००
४२५	**संस्कारप्रकाश**– (मूलमात्र संस्कृत में) स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत इस ग्रन्थ में षोड़ससंस्कार, लुप्तसंस्कारप्रायश्चित्त, व्रात्यप्रायश्चित्तप्रयोग, पुनरुपनयनाधिकारी, अङ्गबंगादि देशगमन, लशुनादिभक्षण, सुरापानादिप्रायश्चित्त, समुद्रयात्रा प्रायश्चित्त, कलिवर्ज्यधर्म, पुनरुपनयन प्रकार इत्यादि सभी विषय है।	१००.००
४३०	**सन्ध्योपासना**– भाषा टीका– देवर्षि पितृतर्पण सहित।	
४३३	**सन्ध्योपासना**– (सामवेदीय) मूल। संस्कृत में।	५.००

अष्टादश महापुराण ग्रन्थ

४४९	**शिवमहापुराण**– हिन्दी टीका सहित। स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत सरल हिन्दी टीका। बड़ा ग्रन्थ।२४०००श्लोक। इसमें विद्येश्वरसंहिता २०००श्लोक, रुद्रसंहिता १०५३० श्लोक, शतरुद्रसंहिता २१५० श्लोक, कोटीरुद्रसंहिता २२४०	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	श्लोक,उमासंहिता १८४०श्लोक, कैलाससंहिता १२४० श्लोक और वायवीयसंहिता ४००० श्लोक हैं। ग्लेज कागजपर बडे अक्षरों में। बॉक्स पैकिंग में। ग्रन्थ साईज, पत्राकार –	१५००.००
४४९ब	**शिवमहापुराण**– उपरोक्त ग्रन्थ – ग्रन्थ साईज, सजिल्द, दो जिल्दों में–	१७००.००
४५०	**शिवमहापुराण–(भाषावार्तिक)**– अनुवादक स्व.वि.वा.पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र। शिवभक्तों को अवश्य लेना चाहिये। इसमें संस्कृत श्लोक नही है। उनका हिन्दी अनुवाद है। प्रत्येक श्लोक का अर्थ जानने के लिये श्लोकांक भी दिये गये हैं। बड़े अक्षरों में, बड़े आकार में। कुल पृष्ठ संख्या१३३६, आकार१३" x ९.५" ग्लेज कागज, टिका ऊ कवर सुशोभित सुन्दर मजबूत जिल्द, कोरोगेटेड बॉक्स पैकिंग में।	
५५१	**शिवमहापुराण–(भाषावार्तिक)**– उपरोक्त ग्रन्थ मध्यम अक्षरों में,मध्यम आकार में। मनोहारी सुन्दर बहुरंगी मुखपृष्ठ। सजिल्द,कोरोगेटेड बॉक्स पैकिंग में।	६००.००
४६२	**श्रीमद्भागवतचूर्णिका**– संस्कृत टीका। बड़े अक्षरों सहित सप्ताह पारायण करनेवालों को परमोपयोगी ग्रन्थ। बॉक्स पैकिंग में। पत्रांकार –	१४००.००
४६२ब	**श्रीमद्भागवतचूर्णिका**– उपरोक्त ग्रन्थ, ग्रन्थ साईज – स.जिल्द –	१५००.००
४६७	**श्रीमद्भागवत**– गोलोकवासी कविवर लाला शालिग्रामजी कृत हिन्दी टीका सहित। माहात्म्य, शंकासमाधान और ५०० दृष्टान्तों सहित इस सरल टीका को छोटे–बड़े सभी भलीभांति समझ सकते है। यथास्थान दोहा, कवित्त, सवैया तथा भजनादि भी प्रसंगानुकूल लिखे गये हैं। ग्रन्थ साईज,बॉक्स पैकिंग में। पत्राकार –	१५००.००
४६७ब	**श्रीमद्भागवत**– उपरोक्त ग्रन्थ, ग्रन्थ साईज – दो जिल्दों में – सजिल्द –	१७००.००
४६८	**शुकसागर**– अर्थात् श्रीमद्भागवत भाषा संपूर्ण बारहों स्कन्ध गोलोकवासी कविवर लाला शालिग्रामजी कृत श्लोकांको सहित सरल भाषा जिसे छोटे–बड़े सभी भलीभांति समज सकते है। प्रसंगानुसार यथास्थान दोहा, कवित्त, सवैया तथा भजनादि भी लिखे गये हैं। शंकासमाधान भी उचित रीति से किया गया है। और उपयोगी दृष्टान्त भी प्रसंगानुसार डाले गये हैं। ग्लेज कागज, बड़े अक्षरों में। साईज १३" X ९.५"। पृष्ठ संख्या १४५०। सजिल्द–कोरोगेटेड बॉक्स पैकिंग में।–	१५००.००
४७८	**मार्कण्डेयपुराण**– मूल तथा दुर्गासप्तशती के १३ अध्याय। स्व. पं. कन्हैयालालजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें मार्कण्डेय और जैमिनी का सत्संग और संवाद, अप्सराओं पर दुर्वासामुनि का शाप, कंक के मारे जानेपर विद्युत्‌रूप राक्षस का मारा जाना, पक्षियों का जन्म और चरित्र और देवीजी का माहात्म्य आदि अनेक विषय हैं	८००.००
४७९	**श्रीमद्भागवताद्यपद्यव्याख्याशतक**– संस्कृत में। जन्माद्यस्य श्लोक के सौ अर्थ। (जीर्ण)	
४९८	**वामनपुराण**– पं. श्यामसुंदरलालजी त्रिपाठी कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	कपालमोचनआख्यान, दक्षयज्ञविनाश, महादेव का बालरूप धारण, कामदेव का दहन, प्रह्लाद–नारायण युद्ध और देवासुर संग्रामादि कथाएँ वर्णित हैं।	६००.००
४९९	**केदारखण्ड–** स्कन्धपुराणान्तर्गत मूलमात्र। पुराणों की तरह सृष्टि, स्थिति, सूर्यचन्द्रवंशी अनेक राजाओं के आख्यानों के अतिरिक्त नादब्रह्म और रागरागिनी, स्वरताल आदि गंधर्वविद्या का अपूर्व वर्णन, हिमालय के समस्त तीर्थों का वर्णन, देवासुर संग्राम तथा श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण, जटायु आदि के तपःस्थानों का वर्णन आदि चित्ताकर्षक विषय २०६ अध्यायों में। केवल संस्कृत में। (जीर्ण) पत्राकार –	
५०८	**अष्टादशपुराणदर्पण–** अर्थात् अठारहों पुराणों का दर्पण के समान वर्णन। स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र निर्मित इस ग्रन्थ में वेद से पुराण विषय का वर्णन, सब पुराणों के अध्याय और उनकी कथा, पुराणों पर विचार, शंका–समाधान सहित लिखा है।	३५०.००
५१२	**गरुड़पुराण–** (प्रेतकल्प) १६ अध्यायों में प्रेत का कर्म और यममार्ग वर्णनादि। हिन्दी टीका सहित।	२५०.००

उप–पुराण

५२७	**श्रीमद्देवीभागवत–** स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें मुख्य देवीजी के पीठादिक का विस्तार, संपूर्ण शक्तियों का कथन और उनके अवतार तथा मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, कवचादि गायत्री आदि के स्तोत्रादि अपूर्व विषय है। ग्रन्थ साईज, बॉक्स पैकिंग में। पत्राकार –	१३००.००
५२७ब	**श्रीमद्देवीभागवत–** उपरोक्त ग्रन्थ, ग्रन्थ साईज – दो जिल्दों में – सजिल्द –	१५००.००

माहात्म्यादि ग्रन्थ

५३६	**एकादशीमाहात्म्य–** हिन्दी टीका सहित। इसमें २६ एकादशी व्रतादिकों का फल और ऐतिहासिक माहात्म्य का वर्णन है।	२५०.००
५३९	**कार्तिकमाहात्म्य–** (पद्मपुराणोक्त) कार्तिक स्नानविधि और वृन्दाजालंधरो – पाख्यानादि हिन्दी टीका सहित।	६०.००
५७३	**पुरुषोत्तममासमाहात्म्य–** अर्थात् अधिकमासमाहात्म्य। पद्मपुराणान्तर्गत। हिन्दी टीका सहित।	१००.००
५८८	**माघमासमाहात्म्य–** हिन्दी टीका सहित। इस ग्रन्थ में मणिशैल वर्णन, माघ–स्नानप्रशंसा, शालिग्रामशिलामहिमा, प्रयागस्नानप्रशंसादि वर्णन है।	
५९३	**रुद्राक्षमाहात्म्य–** रुद्राक्ष की उत्पत्ति, माला धारण करने के अधिकारी एवं रुद्राक्ष की महिमा आदि विषय है। हिन्दी टीका सहित।	५.००
५९९	**वैशाखमाहात्म्य–** स्कन्दपुराणान्तर्गत। हिन्दी टीका सहित।	७५.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य

व्रतकथा ग्रन्थ

६०७	**अनन्तव्रतकथा-** हिन्दी टीका सहित।	
६१६	**पञ्चभीष्मककथा-** गोत्रिरात्रव्रतकथा, तुलसीत्रिरात्रव्रत और वटसावित्रीव्रतकथा हिन्दी टीका सहित। (पुस्तकाकार)	१५०.००
६२५	**सत्यनारायणव्रतकथा-** हिन्दी टीका सहित।	५०.००

भारतादि इतिहास ग्रन्थ

६३७	**अध्यात्मरामायण-** आगरा निवासी पं. रामेश्वरजी भट्ट कृत, हिन्दी टीका सहित। श्रीरामचन्द्रजी का सम्पूर्ण चरित्र। पत्राकार-	५५०.००
६३७ब	**अध्यात्मरामायण-** उपरोक्त ग्रन्थ, पुस्तकाकार सजिल्द-	६००.००
६४०	**अद्भुतरामायण-** स्व. वि .वा प. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित।	१००.००
६४२	**गर्गसंहिता-** (उग्रसेनजी कृताश्वमेधादि दस खण्ड और माहात्म्य सहित) महामुनि गर्गाचार्यजी विरचित बारह हजार श्लोकों के इस ग्रन्थ में भगवान श्रीकृष्ण अवतार रहस्य से लेकर पश्चिमावस्थातक के पावन चरित्रोंका वर्णन है। निर्गुण भक्तियोग, भक्तमाहात्म्य, भक्त्युत्कर्ष, वदनगर वर्णनान्तर्गत रागरागिनियों के परिवार के वर्णनादि अपूर्व विषयों से शोभित सरल, सुबोध, परिमार्जित हिन्दी टीका सहित। पत्राकार-	५५०.००
६४२ब	**गर्गसंहिता-** उपरोक्त ग्रन्थ, सजिल्द-	६००.००
६४३	**जैमिनीयाश्वमेध-भाषा-** (छन्दोबद्ध) परममनोहर दोहा और चौपाइयों में धर्मराज महाराज युधिष्ठिरजी के अश्वमेधयज्ञ की नाना युद्धादि मिश्रित अद्भुत कथा।	५०.००
६५५	**भक्तमाल-** नाभाजी कृत। प्रियादासजी कृत टीका सहित छन्दोंबद्ध। इसमें भक्तों की मन आह्लादकारक रोचक कथाएँ हैं।	१६०.००
६६०	**महाभारत-** (सचित्र) सरल छन्दोबद्ध अठारहों पर्वोसहित। कीर्तनकलानिधि, कविरत्न, धर्मालंकार पं.शैलेन्द्रकुमार वाजपेई तथा काव्यकलाभूषण, अभिनयाचार्य, कुशलकवि प. गोविन्ददासजी विनीत द्वारा लिखित। गायन-वादन में बाजे के साथ पढ़े जा सकने योग्य वीरत्वादि रसों का अनुपम ग्रन्थ।	६००.००
६६२	**मूलरामायण-** मूलमात्र, संस्कृत में।	३०.००
६७९	**वाल्मीकीयरामायण-** स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, अत्युत्तम पीयूषधारी नामक हिन्दी टीका सहित। (संस्कृत श्लोक व उनका हिन्दी में अर्थ) ग्लेज कागजपर बड़े अक्षरों में। कोरोगेटेड बॉक्स पैकिंग में। पत्राकार-	१५००.००
६७९ब	**वाल्मीकीयरामायण-** उपरोक्त ग्रन्थ, ग्रन्थ साईज। दो जिल्दों में --	१७००.००
६८३	**वाल्मीकीयरामायण-सुन्दरकाण्ड-** हिन्दी टीका सहित।	२४०.००
६८५	**वाल्मीकीयरामायण- सुन्दरकाण्ड** -(मूल)केवल संस्कत में। सजिल्द-	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
६९२	**हरिवंशपुराण**– स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। माहात्म्य और सन्तानगोपाल मन्त्रानुष्ठान समेत। सन्तानोत्पति की इच्छा करनेवालों को इसका पारायण करने तथा सुनने से योग्य संतति, लाभ तथा और भी इष्ट सिद्धियां होती हैं। कोरोगेटेड बॉक्स पैकिंग में। ग्रन्थ साईज, पत्राकार –	१३००.००
६९२ब	**हरिवंशपुराण**– उपरोक्त ग्रन्थ। दो जिल्दों मे –	१५००.००

भाषा इतिहास ग्रन्थ

६९९	**अग्रवालों की उत्पति** –	
७०३	**औरंगजेबनामा**– (प्रथम भाग) स्व. रायमुन्शी देवीप्रसादजी मुंसिफ, राज्य जोधपूर प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता रचित। (जीर्ण)	
७०४	**औरंगजेबनामा**– (द्वितीय भाग) (जीर्ण)	
७०५	**औरंगजेबनामा**– (तृतीय भाग) (जीर्ण)	
७०८	**कान्यकुब्जवंशावली**– वंशप्रवर सहित।	१००.००
७११	**जातिभास्कर**–स्व.वि.वा.पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें श्रुति, स्मृति, पुराणों से गोत्र प्रवरादि संग्रहकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि जातियों का सुन्दर वर्णन है।	
७२२	**बुद्धका जीवनचरित्र**– स्वामी परमानन्दजी लिखित।	१८.००
७३७	**राजस्थान इतिहास**– अर्थात् टाड राजस्थान का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक स्व. पं. बलदेवप्रसादजी मिश्र। राजस्थान की वीर, साहसी राजपूत जाति के आचार विचार व आत्मशासनप्रणाली का सजीव वर्णन। किन उपायों से देश की उन्नति होती हैं और किन दुर्गुणों से देश अवनति को प्राप्त हो जाता है। यह जानने के लिये इस पुस्तक को अवश्य लीजिये (दो भागों में)	
	राजस्थान इतिहास– प्रथम भाग जिसमें उदयपुर के महाराणाओं का इतिहास है। साइज ९.५" X ६.५", पृष्ठसंख्या ११००।	८००.००
७३८	**राजस्थान इतिहास**–द्वितीय भाग–जिसमें जोधपुर,बीकानेर,जैसलमेर, जयपुर, शेखावटी,बूंदी और कोटा का इतिहास है।साइज९.५"X६.५", पृष्ठसंख्या११९८	८००.००
७४७	**क्षत्रियवंशावली**– ठाकुर उदयनारायण सिंहजी द्वारा संग्रहीत। क्षत्रिय बन्धुओं के लिये संक्षिप्त में सृष्टि से लेकर वर्तमान समय तक के क्षत्रियों के वंशवृक्ष शाखा, गोत्र, कुलदेवी, कुलदेव आदि को लिखकर विवाह संबंधी निराकरण किया है।	६०.००

व्याकरण ग्रन्थ

७५६	**पूर्वपक्षावली**– पाणिनीय व्याकरणपर। (जीर्ण)	
७५७	**उत्तर पक्षावली**–	
७७३	**लघुव्याकरण**– (जीर्ण)	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य

ज्योतिष ग्रन्थ

८११ **अयोध्याजातक**– हिन्दी टीका सहित । ८.००

८१२ **अर्धप्रकाश**– हिन्दी टीका सहित । इसमें वस्तुओं की तेजी–मंदी देखने का विचार भलीभांति लिखा गया है । १५.००

८१५ **करणकुतूहल**– श्रीमद् भास्कराचार्यजी विरचित तथा हर्षमणि कृत सोदाहरण संस्कृत टीका सहित, ब्रह्मपक्षीय गणितग्रन्थ । इसमें ज्या चापकर्म के विना ही क्रिया साधन बताया है । केवल संस्कृत में । १५.००

८१७ **कर्मविपाक संहिता**– नक्षत्र चरणगत । हिन्दी टीका सहित । २००.००

८२१ **केरलीयप्रश्नरत्न**– हिन्दी टीका सहित । मूकप्रश्न, मुष्टिप्रश्न आदि नानाप्रकार के प्रश्न कहने के लिये बहुत ही चमत्कारी । ६०.००

८२२ **केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रह**– हिन्दी टीका सहित । तात्कालिक लग्न साधनादि के बिना ही भूत, भविष्य बनाने की कुंजी । ३०.००

८२४ **केशवीजातक**– सान्वय सोदाहरण । हिन्दी टीका सहित ।

८२७ **गर्गमनोरमा**– हिन्दी टीका सहित । १०.००

८२८ **गर्गजातक**– हिन्दी टीका सहित । जातक संबंधी अनेक योग । २०.००

८२९ **ग्रहगोचर**– हिन्दी टीका सहित । गोचरग्रहों का विचार । १०.००

८३१ **ग्रहलाघव**– सान्वय हिन्दी टीका सहित और उदाहरण सहित । स्व. ज्योतिर्भूषण पं. बच्चूजी द्वारा परिशोधित । ८०.००

८३५ **गौरीजातक**– हिन्दी टीका सहित । ज्योतिषविद्या की अद्‌भुत पुस्तक । इससे जन्मपत्र का फल प्रत्यक्षसिद्ध कहा जा सकता है । १२०.००

८३७ **चमत्कारचिन्तामणि**– हिन्दी टीका सहित । भावफलादेश का ग्रन्थ । ज्योतिष सीखने वाले विद्यार्थियों के लिये अत्यंत उपयोगी ग्रन्थ । ३०.००

८३८ **चमत्कारज्योतिष**– ज्यो. पं. नारायणप्रसादजी मिश्र रचित । हिन्दी टीका सहित ५०.००

८३९ **जन्मपत्रीप्रदीप**– हिन्दी टीका सहित ।

८४३ **जातकालंकार**– संस्कृत टीका सहित । पत्राकार – २.००

८४४ **जातकालंकार**– हिन्दी टीका सहित । भावफल और आयु कहने में अपूर्व । ३०.००

८४६ **जातकाभरण**– श्रीढुंढिराजजी कृत । हिन्दी टीका सहित । २७०.००

८४५ **जातकचन्द्रिका**– हिन्दी टीका सहित । इसमें जन्मजातक, तन्वादि भावफल, षड्वर्गफल अनेकानेक योगदशादि वर्णित है ।

८५० **जैमिनीसूत्र**– हिन्दी टीका सहित । चार अध्यायों में मारकादि, स्वस्थानादि, निर्णयादि संपूर्ण फल और शंका–समाधान सहित । ५०.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
८५३	**ज्योतिषसार–** हिन्दी टीका सहित। इसमें संपूर्ण मुहूर्त जन्मपत्रज्ञान, वर्षज्ञान आदि बहुत विषयों का संग्रह है।	१६०.००
८५४	**ज्योतिषश्यामसंग्रह–** चक्रोदाहरण युक्त हिन्दी टीका सहित। जातकफलादेश संबंधी अपूर्व अनुभवों से युक्त।	२५०.००
८५६	**ज्योतिर्गणितकौमुदी–** अर्थात् शुद्धग्रह गणित अपूर्व ग्रन्थ। ज्योतिषाचार्य विद्यानिधि श्रीरजनीकांतजी शास्त्री बी. ए. बी. एल्. साहित्य सरस्वती ज्योतिभूषण कृत। सूक्ष्म गणितार्थियों के लिये अत्युपयोगी है।	२२०.००
८५९	**ताजिकनीलकण्ठी–** नीलकण्ठाचार्यजी विरचित, पं. महीधरजी कृत हिन्दी टीका सहित, तन्त्रत्रयात्मक। इसमें वर्षपल बनाने का पूरा हाल और वर्षान्तदशाफल, द्वादशभाव और प्रश्नतन्त्र में अनेक प्रकार प्रश्न के विषय चमत्कारिक है।	
८६०	**ताजिकभूषण–** गणेशदैवज्ञजी कृत, हिन्दी टीका सहित। इसमें वर्षपत्रि [illegible] फलादेश विस्तार पूर्वक है।	१००.००
८६१	**ताजिकसंग्रह–** हिन्दी टीका सहित। द्वादशभावों का फल, वर्ष बनाने ग्रह स्पष्ट करने, लघुपंचवर्गी, हर्षबल आदि के चक्रों से स्पष्ट उदाहरण, अरिष्टविचार, अरिष्टपरिहार और चमत्कारिक योग लिखे हैं।	२०.००
८६२	**दीपिका वा शुद्धिदीपिका–** महामहोपाध्याय श्री. श्रीनिवासजी प्रणीत और पं. कन्हैयालालजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित। ज्योतिषियों को परमोपयोगी। ज्योतिष के सभी विषय अद्भुत अनुभवसहित ज्योतिष का अपूर्व चमत्कार दिखाने के लिये अवश्य संग्रह करिये।	१००.००
८६४	**धनुर्वेदसंहिता–** महर्षि वसिष्ठमुनिजी प्रणीत, हिन्दी टीका सहित। युद्धविद्या सीखने में यह अत्यंत लाभदायक है।	
८६५	**नष्टजन्माङ्गदीपिका एवं पञ्चाङ्गदीपिका–** गद्य–पद्यात्मक टीका सहित।	
८६७	**नारदसंहिता–** (होरास्कन्ध) हिन्दी टीका सहित। इसमें शाखोपनयन, ग्रहचार, शब्दलक्षण, सम्वतसरफल, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, मुहुर्त, उपग्रह, सूर्यसंक्रांति, ग्रहगोचर, चन्द्रताराबलाध्याय लग्नविचार, गर्भाधानादि षोडससंस्कार, प्रतिष्ठा, यात्रा, गृहप्रवेश सद्योवृष्टि, कूर्मलक्षणं, उत्पातशान्ति इत्यादि अनेक विषय हैं।	१४०.००
८६८	**परीक्षाचक्रावली–** हिन्दी टीका सहित। इसमें पचास चक्र उत्तरयुक्त और चौसठ ग्रहदर्शनचक्र सोदाहरण वर्णित है।	२०.००
८६९	**पल्लीपतनकारिका–** हिन्दी टीका सहित।छिपकली के शुभाशुभ फल। (जीर्ण)	
८७२	**पत्रीमार्गप्रदीपिका–** और वर्षदीपिका। पं. महादेवजी विरचित मूल और श्रीनिवास कृत हिन्दी टीका सहित। इसके द्वारा जन्मपत्री और वर्षपत्री उत्तम रीति से थोडे ही परिश्रम के गणित से बना सकते है।	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
८७३	**पद्मकोश**– हिन्दी टीका सहित। केतु, मुंथेश व नवग्रहों से दृष्टियुक्त मुंथाफल सहित। इसमें वर्षफल का भावाध्याय अच्छा है।	६.००
८७६	**प्रश्नचण्डेश्वर**– संस्कृत टीका तथा हिन्दी टीका सहित। इसमें सत्त्वादि साधनफल लाभ कार्य, अमुक कार्य, अमुक प्रश्न, मुष्टिप्रश्न, यात्रा, आगमन, युद्धसंबंध, रिपुनाश, दुर्गभङ्ग, कन्या–पुत्र विवाह, शुभाशुभ, इन्द्रचाप, शिकार तथा भोजनादि प्रश्न है।	५०.००
८७७	**प्रश्नवैष्णव**– हिन्दी टीका सहित। इसमें इत्थशालादि योग और बारहों भवन के अपूर्व प्रश्नविषय है।	
८७९	**प्रश्नज्ञानप्रदीप**– हिन्दी टीका सहित। (श्रीमान् सुठालियाधीश महाराजा शंभुसिहजी देव विरचित केरलीय प्रश्नशास्त्र) इससे भूत, भविष्य, वर्तमानादि अनेक प्रश्नफल शीघ्र कह सकते है।	१३०.००
८८०	**प्रश्नशिरोमणि**– हिन्दी टीका सहित। संपूर्ण द्वादश भावो का प्रश्न और उन्हीं का फल, लाभप्रश्न, सन्तानप्रश्न, स्त्रीप्राप्तिप्रश्न, यात्राप्रश्न, द्रव्यप्राप्तिप्रश्न आदि लिखे हैं।	१००.००
८८४	**मानवपञ्चाङ्ग**– (पं. श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग) सं.२०७६ अपनी पिछली सभी विशेषताओं के अलावा बहुत उपयोगी नये विषयों सहित। (नेट)	७२.००
८८४अ	**मानवपञ्चाङ्ग**– (पं. श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग) सं.२०७७ का (नेट)	७५.००
८८४ब	**दशवर्षीय मानवपञ्चाङ्ग**– विक्रम संवत् २०५१ से २०६० तक का श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग का संच।	
८८४क	**दशवर्षीय मानवपञ्चाङ्ग**– विक्रम संवत् २०६१ से २०७० तक का श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग का संच।	१२०.००
८८४ड	**दशवर्षीय मानवपञ्चाङ्ग** – विक्रम संवत् २०७१ से २०८० तक का श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग का संच।	३००.००
८८५	**श्रीवेंकटेश्वर शताब्दिपञ्चाङ्ग**– विक्रम संवत् २००१ से २१०० तक पूरे एक सौ वर्ष का पञ्चाङ्ग एक ही जिल्द में। संपादन कर्ता– नवलगढ निवासी पं. ईश्वरदत्तजी शर्मा। रेक्जिन कवर सुशोभित मजबूत देदिप्यमान सुंद्र जिल्द, कोरोगेटेड बॉक्स पैकिंग में।	१२००.००
८८७	**बालबोधज्योतिष**– हिन्दी टीका सहित। इस ग्रन्थ से बालक भी ज्योतिष के कठिन विषयों को सरलता से समझ सकते हैं।	७०.००
८९०	**बृहज्जातक**– (वराह मिहिराचार्य कृत) पं. महीधर शर्मा कृत सरल हिन्दी टीका सहित। इसमें यथास्थान विविध फल, प्रश्न, शकुन, योगाभ्यास, कलाकौशल्य व कामकेलि आदि अनेक विषय मूलाक्षरों से दिखाकर एक–एक श्लोक के अर्थ सप्रमाण लिखे हैं।	१८०.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
८९१	**बृहत् पाराशरहोराशास्त्र**- पूर्वखण्ड तथा उत्तरखण्ड संपूर्ण। संस्कृत मूल तथा हिन्दी टीका सहित। इसमें दशान्तर्दशा तथा ग्रहों के पृथक्-पृथक् भावफलादेश। इत्यादि अपूर्व विषय है।	५००.००
८९२	**बृहद्यवनजातक**- स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। लग्नादि द्वादशभाव, ग्रहनक्षत्र स्थानाधिपति स्थानांतर आदि के फलादेश और सुख दुःख तथा आयु कहने में एक ही है। एक-एक भाव का सात-सात प्रकार से फल लिखा गया है।	
८९३	**बृहदवकहडाचक्र**- हिन्दी टीका सहित।	२५.००
८९५	**बृहद्दैवज्ञरंजन**-मूल- (केवल संस्कृत में) अट्ठासी प्रकरणों में पञ्चाङ्ग निर्माणोपयोगी कालज्ञान से लेकर वास्तुप्रकरण पर्यन्त सभी विषय अर्थात् ज्योतिष के सिद्धान्त, संहिता, होरा नामक तीनों स्कन्धों का कोई विषय बाकी नहीं रहा है, यही नहीं किन्तु कई विषय ऐसे भी हैं, कि, जो अन्यत्र कहीं नहीं हैं। इसके द्वारा ज्योतिष का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाया जा सकता है।	५०.००
८९६	**भविष्यफलभास्कर**- हिन्दी टीका सहित। केरलदेशीय महामहोपाध्याय सदाशिवशास्त्रीजी की सहायता से पं. लक्ष्मीनारायणजी ज्योतिषी द्वारा निर्मित। इसमें प्रत्येक वर्ष का तेजी-मंदी आदि सभी भविष्यफल अनुभवसिद्ध लिखा है।	८०.००
८९७	**भावकुतूहल**-पं.जीवनाथजी विरचित मूल और पं.महीधरजी शर्मा कृत,हिन्दी टीका सहित। इसमें संज्ञाध्याय,अरिभंग पुत्रभावविचार, राजयोग, सामुद्रिक, स्त्रीजातिकाध्याय, स्त्रियों का राजयोग, प्रत्येक ग्रहों का फल, ग्रह के गर्वितादि भावादि हैं।	५५.००
८९८	**भुवनदीपक**- संस्कृत टीका तथा हिन्दी टीका सहित। ३६ द्वार में कई कहने में अनुभव सिद्ध ग्रन्थ। कुण्डली का फल तथा प्रश्न करनेवाले ग्रन्थों में यह सर्वोत्तम है।	
९०१	**भृगुसूत्र**- हिन्दी टीका सहित। महामुनि भृगुजी प्रणीत यह ग्रन्थ जन्मपत्र का फल कहने में अद्वितीय है।	६०.००
९०९	**मानसागरी**- हिन्दी टीका सहित। मानसागर प्रणीत जातक, ताजिक, स्वरप्रश्न, शकुन आदि ग्रन्थों में अत्यंत सरल ग्रन्थ। इसमें जन्मपत्र बनाने का संपूर्ण फलादेशादि भली प्रकार वर्णित है।	३००.००
९११	**मुहूर्तचिन्तामणि**- प्रतिमाक्षरा संस्कृत टीका सहित। ज्योतिषाचार्य तीर्थलब्ध राजसुवर्णपदक श्री अनूपजी मिश्र कृत। उपयुक्त स्थलसमागत गणित विषय वासनात्मक विवृत्तिसहित अवश्य द्रष्टव्य। (जीर्ण)	
९१३	**मुहूर्तचिन्तामणि**- पं. महिधरजी शर्मा कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें संपूर्ण शास्त्रार्थ और सब प्रकार के सूक्ष्म गणित लिखे गये हैं।	१३०.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
११५	**मुहूर्तप्रकाश**– हिन्दी टीका सहित। स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत, इसमें अनेक ग्रन्थों के आधार से संज्ञा १, त्याज्य २, नाना मुहूर्त ३, गोचर ४, संस्कार ५, विवाह ६, यात्रा ७, वास्तु ८ और मिश्रित ९ ये नव प्रकरण अपूर्व लिखे हैं।	२००.००
११८	**मुहूर्तदीपक**– महादेव भट्ट विरचित – संस्कृत टीका सहित। (जीर्ण)	
१२०	**मुहूर्तसंग्रहदर्पण**– हिन्दी टीका सहित।	
१२७	**रमलनवरत्न**– हिन्दी टीका सहित तथा रमलदानियाल सहित। इसमें सोलह शकल पाशा फेंकने आदि का प्रकार है।	३०.००
१३२	**लघुपाराशरी**– पं. रामेश्वरजी भट्ट कृत सान्वय हिन्दी टीका सहित।	३०.००
१३८	**लग्नचन्द्रिका**– हिन्दी टीका सहित। इसमें सुगम रीति से जन्म की तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण का फल, सम्वत्सर–उत्तरायण–दक्षिणायन का फल, ऋतु और मासफल, संम्पूर्ण ग्रहों का फल, भावाध्याय, एकग्रह, द्विग्रह आदि योग राजयोग, अरिष्टाध्याय, चन्द्र निर्णय और विंशोत्तरी आदि दशा इत्यादि जन्मपत्र का फल विचार भली प्रकार से लिखा है।	४५.००
१४०	**लग्नजातक**– स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित।	३०.००
१४१	**लग्नवाराही**– पं. श्यामसुन्दरजी त्रिपाठी कृत। हिन्दी टीका सहित।	
१४३	**लीलावती**– भास्कराचार्यजी कृत मूल और पं. रामस्वरूपजी कृत हिन्दी टीका सहित। व्यक्त गणित में अपूर्व ग्रन्थ।	१८०.००
१४४	**लोमसंहिता**– भावफलाध्याय। केवल संस्कृत में।	५.००
१४५	**वसंतराजशाकुन**– संस्कृत टीका तथा हिन्दी टीका सहित। शकुनशास्त्र का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ। पशु–पक्षी आदि के नाना शकुनों द्वारा विना किसी उपदेश के व गणित किये बिना ही इसके पढ़ लेने मात्र से साधारण मनुष्य भी भूत, भविष्य, वर्तमान का अद्भुत वृत्तान्त जान लेता है।	
१४६	**वर्षयोगसमूह**– स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित	१५.००
१४७	**वर्षप्रबोध**– अर्थात् नूतन सम्वतसर शुभाशुभ प्रबोध। हिन्दी टीका सहित।	२५.००
१४८	**वाराही (बृहत्) संहिता**– वराह मिहिराचार्यजी प्रणीत। स्व. पं. बलदेव–प्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित। इस ज्योतिष के प्रधान ग्रन्थ में नवग्रह, अगस्त और सप्तऋषियों की चाल का फल, सूर्य–चन्द्र ग्रहण वा धूमकेतु के फल, ग्रहयुद्ध, ग्रहसमागम, ग्रहवर्षफल, वृष्टि संबंधी अनेक विचार, दिग्दाह, भूमिकम्प, उल्कापरिवेष, इन्द्रधनुष्य, गंधर्वनगर, खञ्जनदर्शनउत्पात, मयुरचित्रक पुष्पस्नान, भद्दलक्षण, मकान बनाने की विधि और प्रतिष्ठापन आदि १०८ विषय हैं।	३००.००
१५०	**विवाहवृन्दावन**– संस्कृत टीका सहित– केशव दैवज्ञ रचित। (जीर्ण)	
१५२	**विश्वकर्मप्रकाश**–(शिल्पशास्त्र)–पं. मिहिरचन्द्रजी कृत, हिन्दी टीका सहित।	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	इसमें वास्तुपुरुषोत्पत्तिपूजन, भूमिलक्षण, गृह में प्रवेशशकुन, खनन, स्वप्नविधि, भूमिफल, गृहारंभ समयशुद्धि, ध्वजादि आयफल, देवादिकों के स्थानों के निर्णय, ध्रुवादि गृहभेद, स्तम्भप्रमाणादि, शंकुशिलान्यास, प्रासाद निर्णय विषय हैं।	१९०.००
९५३	**विश्वकर्मविद्याप्रकाश**–(शिल्पशास्त्र)–हिन्दी टीका सहित। देवालय व मकान आदि बांधने की तथा लाग्निक ग्रहादि विचार से घर बनाने की विधि।	३०.००
९५७	**शम्भुहोराप्रकाश**– पं. पुंजराजाचार्यजी कृत, हिन्दी टीका सहित। इसमें ग्रहों के योगों से विशेष चमत्कारिक फल तथा जातक के सदृश ग्रहषड्फलादि गणित, अंशायु, पिण्डायु, निसर्गायु आदि गणित, अष्टकवर्गदशागणित आदि ऐसे अपूर्व विषय हैं कि, जिनसे आयु का निर्णय यथार्थ रूप से होता है।	
९५८	**शीघ्रबोध**– हिन्दी टीका सहित। इसमें विवाहादि प्रकरण है।	५०.००
९६४	**सर्वार्थचिन्तामणि**– पं. महीधरजी शर्मा कृत हिन्दी टीका सहित। जन्मपत्र और भावफल लिखने में विशेष लाभदायक है।	१३०.००
९६५	**समरसार**– संस्कृत टीका तथा हिन्दी टीका सहित। सरलता के लिये टीका में उदाहरण व चक्र भी दिये गये हैं। इसमें राजयुद्ध, मल्लयुद्ध, पण्डितों का शास्त्रार्थ तथा मुकदमा आदि में किस की और कैसे जीत होगी? इत्यादि जानने के लिये "कटपय" क्रम से बहुत उत्तम–उत्तम युक्तियां है, तथा इससे जन्मपत्री आदि के बिना ही सच्चा फल तत्काल ज्ञात होता है।	४०.००
९६६	**सर्वतोभद्रचक्र**– दैवज्ञ भूषण पं. मीठालालजी व्यास कृत, हिन्दी टीका सहित	६०.००
९६७	**सर्वसंग्रह**– उज्ञयिनि निवासी सांदीपनिकुलावतंस श्रीदीनानाथाचार्यजी कृत, स्व. ज्योतिर्विभूषण पं. बच्चू झा कृत हिन्दी टीका सहित। प्राचीन ग्रन्थों के सब विषय नवीन–प्राचीन श्लोकों द्वारा पांच अध्यायों में। प्रथम मिश्राध्याय में– गणित, सिद्धान्त, जन्म और वर्षपत्र, सामुद्रिक, अंगस्फुरणादि शकुन। द्वितीय देहस्वराध्याय में– स्वरज्ञान, स्वरद्वारा प्रश्नोत्तर कथन, स्वर बदलने का उपाय, छायासाधन, स्वर से मृत्युकाल का ज्ञान और दीर्घायु होने का उपाय। तृतीय कालस्वराध्याय में– पञ्चस्वर (बाल, कुमार, युवा आदि)के द्वारा समस्त फलादेश। चतुर्थ रमलाध्याय में– सब प्रश्नों के उत्तर रमलद्वारा। पंचम मुहुर्ताध्याय में– समस्त मुहूर्तों का विस्तृत वर्णन है।	२००.००
९६८	**स्वप्नाध्याय** – हिन्दी टीका सहित। स्वप्न का फल कहने में अपूर्व है।	८.००
९६९	**सामुद्रिकशास्त्र**– राधाकृष्णजी मिश्र कृत,बडा सान्वय हिन्दी टीका सहित। इसमें स्त्री पुरुषादि के प्रत्येक अंग–उपांगादिक का वर्णन और हस्तरेखा, ललाटरेखादि का अपूर्व ज्ञान लिखा है।	१३०.००
९७१	**सिद्धान्तयोगाकर**– हिन्दी टीका सहित। गणित फलितादि सिद्धान्त सरलता के साथ स्पष्ट लिखें हैं। (जीर्ण)	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
९७४	**स्त्रीजातक**- हिन्दी टीका सहित। इसमें स्त्रियों के अंग-प्रत्यंगादिकों व तिल मशकादिकों तथा जन्म कालीन ग्रहादिकों के अनुसार स्त्रियों का भूत, भविष्य, वर्तमान शुभाशुभ फल ठीक मिलता है।	१२०.००
९७६	**सूर्यसिद्धान्त**-संस्कृत गूढ़ार्थदीपिका टीका और हिन्दी टीका सहित। इसमें कालविभाग, ग्रहगति के कारणादि, पूर्व-पश्चिमादि रेखानिर्णय, स्पष्ट चंद्रसूर्यादि छायाज्ञान, चंद्रलंबन, सूर्यग्रहण परिलेख, ग्रहदर्शन, नक्षत्रस्थान, उदयास्तकाल निर्णय, चंद्रोदयापाताधिकार, अध्यात्मविद्या, गोलयंत्रादि तथा कालनिर्णयादि विषय हैं।	२२०.००
९७८	**संकेतनिधि**- अमृतसर निवासी श्री. पं. रामदयालुजी कृत मूल और पं. रामदत्तजी कृत संस्कृत टीका तथा ढाढोली निवासी पं. रामदयालजी कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें संस्कृत काव्यरचना बहुत सुंदर और जन्मपत्र देखने के चमत्कारी योग बडे विलक्षण व अनुभव सिद्ध हैं।	
९८२	**हनुमानज्योतिष**- (प्रश्न ग्रन्थ) हिन्दी टीका व चक्रों सहित प्रश्न कहने में अपूर्व है	५०.००
९८७	**हायनभास्कर**- (भाषा ज्योतिष) हिन्दी टीका सहित। इस ग्रन्थ से वर्षफल बनाने में बडी सहायता मिलती है।	७.००
९९३	**ज्योतिषकल्पद्रुम**- (हिन्दी में) श्री महाराज शंभुसिंहजी सुठालियाधीश कृत। इसमें पृच्छक का विचार, चोरी, रोग उत्पत्ति, भोजन, मृत्यु, स्वप्न, विवाह, शकुन और नद्यागम यात्रा तथा वृष्टि इत्यादि मनुष्योपयोगी प्रकरण तथा प्रकाशक नवग्रहों के अतिरिक्त अप्रकाशक ग्रहों का भी विचार है।	१००.००
९९८	**मेघमालाभड्डली**- दोहा, चौपाई, आदि में वर्षादि का विचार भली प्रकार से लिखा गया है।	४०.००
९९९	**रमलगुलजार**- भाषा। यवनाचार्य ने अपने रचे समस्त रमलग्रन्थों का सार ग्रहण कर इसे बनाया और यह महाराज विक्रमादित्य के समय में यूनान से भारत में आया तथा अकबर बादशाह के समय बीरबल द्वारा हिन्दी में अनुवादित हुआ। इसमें १०४१ प्रश्न हैं।	२००.००
१०००	**रमलसारप्रश्नावली तथा वर्णमातृकाप्रश्न**- (भाषा) इसमें तीन दफे पांसा फेंक के अंक जोड़ प्रश्न कहने का प्रकार है।	१०.००
१००८	**सम्वत्सर फल दीपिका** - (भाषा) दोहा चौपाई में।	३.००

वैद्यक ग्रन्थ

१०१० **अष्टांगहृदय**-(वाग्भट्ट) संपूर्ण- श्री वाग्भट्ट कृत मूल की आयुर्वेदाचार्य पं. शिवशर्माजी कृत "शिवदीपिका" नामक सरल हिन्दी टीका सहित। इसमें सूत्रस्थान, शारीरस्थान, निदानस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान, उत्तरस्थान इत्यादि में

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	संपूर्ण रोगों की उत्पत्ति, निदान, लक्षण और क्वाथ, चूर्ण, रस, घी, तैल आदि से अच्छी चिकित्सा वर्णित है।	१००.००
१०११	**अष्टांगहृदय**–(वाग्भट्ट) सूत्रस्थान– श्री वाग्भट्ट कृत मूल की आयुर्वेदाचार्य पं. शिवशर्माजी कृत "शिवदीपिका" नामक सरल हिन्दी टीका सहित।	
१०१२	**अष्टांगहृदय**–(वाग्भट्ट)सूत्रस्थान–तीन संस्कृत टीकाओं व टिप्पणी सहित(जीर्ण)	
१०१३	**अमृतसागर**– (हिन्दी में) इसमें सर्व रोगों के वर्णन और यत्न हैं। इसके द्वारा विना गुरु वैद्य हो सकते है।	४५०.००
१०१४	**अर्कप्रकाश**– (लंकापति रावण कृत) हिन्दी टीका सहित। इसमें नाना प्रकार के यंत्रों से औषधियों का अर्क खींचना और गुणवर्णन भले प्रकार से किया गया है।	२००.००
१०१५	**अनुपानदर्पण**– हिन्दी टीका सहित। इसमें रस–धातु बनाने की क्रिया और रोगानुसार औषधियों के अनुपान वर्णित है।	
१०१६	**अनुभूतयोगावली**– चिकित्साग्रन्थ। अनुभव की हुई हरेक रोग की उत्तम औषधियां।	३०.००
१०२४	**इलाजुल गुर्बा** – हिन्दी अनुवाद।	
१०२८	**कल्पपञ्चकप्रयोग**– हिन्दी टीका सहित। चोपचीनी कल्प, रुद्रवन्तीकल्प, नागदसनीकल्प, शिवलिङ्गीकल्प तथा पलाशकल्पों का वर्णन है।	२०.००
१०२९	**कामसूत्र**– महर्षि वात्सायन प्रणीत पं. यशोधरजी विरचित जयमङ्गलाख्याव्याख्या तथा रिसर्च स्कॉलर पं. माधवाचार्यजी कृत, पुरुषार्थ प्रभाख्य हिन्दी टीका व टिप्पणी से विभूषित। इसमें स्त्री–पुरुषों के सांसारिक जीवन में निर्विवाद सर्वोच्च बनाने का उत्तम साधन है। इसके सर्वाङ्ग परिपूर्ण ज्ञान से ही दम्पत्तियों का जीवन सुखमय बन सकता है। संपूर्ण ग्रन्थ मजबूत दो जिल्दों में, बॉक्स पैकिंग में।	८००.००
१०३१	**कामरत्न**– योगेश्वर नित्यनाथ प्रणीत और स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें कामशास्त्रादि विषय और रोगों की औषध तथा वाजीकरण औषध अनुभूत हैं और वशीकरण प्रयोग भी हैं।	३००.००
१०३२	**कालज्ञान**– स्व. दत्तरामजी चौबे कृत, हिन्दी टीका सहित। इसका संपूर्ण अभ्यास करने से भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान तथा मृत्युकाल का निश्चित ज्ञान होता है।	४०.००
१०३५	**कुमारतन्त्र**– लंकाधिपति रावण कृत, हिन्दी टीका सहित। इसमें बालकों की अपूर्व चिकत्सा वर्णित है।	३०.००
१०३८	**कोक्सारवैद्यक**– नारायणप्रसादजी मिश्र कृत तथा इक्षागिरीजी कृत कामकलासार सहित। वात्सायन कामसूत्र आदि ग्रन्थों में प्रतिपादित विषयों को सरलता से समझने के लिये इक्षागिरीजी ने कामशास्त्र तथा वैद्यक के अनुभव से कोकशास्त्रों में नही पाये जानेवालें साधनों का विशद रूप से संग्रह किया है।	२५०.००
१०४०	**गुणों की पिटारी**– काशी निवासी स्वामी परमानंदजी कृत हिन्दी भाषा में। इसमें	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	अनेक प्रकार की धातुओं के फूंकने, सेवन करने व सिन्दूरादि के बनाने तथा साबुन, पारा, गंधक और सिंगरफ वगैरह के बर्तनों के बनाने के तरीके हैं।	४५.००
१०४३	**चर्याचन्द्रोदय**– हिन्दी टीका सहित। इसमें उचित आहार, विहार, व्यंजन बनाने की क्रिया के गुण तथा ऐसे अनुपम नियमों का वर्णन है, जिनके पालने से दीर्घायु, आरोग्य और सौभाग्य प्राप्त होता है। (जीर्ण)	
१०४४	**चक्रदत्त**– चिकित्सासार संग्रह। दत्तकुलोत्पन्न चरकचतुरानन श्रीमच्चक्रपाणिजी विरचित। श्रीवाराणसीस्थ हिन्दू विश्वविद्यालयस्थ आयुर्वेद विद्यालयाध्यापक श्री. पं. जगन्नाथजी शर्मा वाजपेयी, आयुर्वेदाचार्य द्वारा नितांत परिशोधित, परिष्कृत सुबोधिनी हिन्दी टीका सहित। इसमें अन्य चिकित्साओं के अतिरिक्त तेल साधनादि प्रकार बहुत अच्छा लिखा है।	२००.००
१०४५	**चरकसंहिता**– महर्षि प्रवर चरकऋषि प्रणीत। मूलमात्र, केवल संस्कृत में। सजिल्द – (जीर्ण)	
१०४६	**चरकसंहिता**– वैद्यरत्न पं. रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीका सहित एवं विद्यालंकार आयुर्वेदाचार्य पं. शिवशर्माजी द्वारा संशोधित। चरक के आठों स्थान एक से एक अपूर्व होनेपर भी चिकित्सास्थान तो अद्वितीय ही है। प्रथम भाग पृष्ठ संख्या ९१६ तथा द्वितीय भाग पृष्ठ संख्या ११३६ है। रेक्झिन कवर सुनहरे अक्षरों से मुद्रित सुंदर से मंडित संपूर्ण– दो जिल्दों में है।	१३००.००
१०५२	**ज्वर तिमिर नाशक**– क्याखूब चौबे रामप्रसादजी कृत, हिन्दी टीका सहित। इसमें आर्य–वैद्यक, यूनानी व डाक्टरी के अनुसार ज्वर आदि रोगों की चिकित्सा तथा सोडा, लेमनेड व अनेक शर्बत आदि बनाने की विधि लिखी है। (जीर्ण)	
१०५३	**डाक्टरी चिकित्सासार**– पं. मुरलीधरजी शर्मा राजवैद्य संग्रहीत सरल हिन्दी भाषा में। इसमें रोगों का आयुर्वेद व डाक्टरी मत से निदान व चिकित्सा वर्णित है तथा संक्षिप्त डाक्टरी निघण्टु भी संमिलित है।	
१०५८	**द्रव्यगुण**– दत्तकुलोत्पन्न–चरकचतुरानन–चक्रपाणिजी विरचित, स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित।	२०.००
१०६०	**नपुंसकामृतार्णव**– वैद्यरत्न पं. रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें नपुंसकोपयोगी नाना प्रकार के तैल, लेप, धृत आदि वाजीकरण और औषधियां सर्वोत्तम हैं।	५०.००
१०६३	**नाड़ीदर्पण**– हिन्दी टीका सहित। आयुर्वेदिक, यूनानी और डाक्टरी मतानुसार चक्रों सहित नाड़ी देखने के प्रकार।	३०.००
१०६४	**नाड़ीपरीक्षा**– हिन्दी टीका सहित। अति सुलभ।	२०.००
१०६५	**नाड़ीविज्ञान**– महर्षि कणाद मुनिजी प्रणीत। हिन्दी टीका सहित।	२०.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
१०६८	**पशुचिकित्सा-(वृषकल्पद्रुम)**– छन्दबद्ध भाषा। इसमें आयविद्यक, यूनानी और डाक्टरी मतानुसार बैल, गऊ और भैंस के शुभाशुभ लक्षण, यंत्र और औषधियों द्वारा चिकित्सा, पहिचान, क्रय–विक्रय मुहूर्त चित्रसहित वर्णित है।	१००.००
१०७४	**पारदसंहिता**– अग्रवाल कुलभूषण अलीगढ़ निवासी बां. निरंजनप्रसादजी गुप्त संग्रहीत तथा व्यासोपाह्व जेठमल्ल काव्यतीर्थ कृत हिन्दी टीका सहित। इस ग्रन्थ में रस विषयक सभी अवयवों का सांगोपांग वर्णन है। अरबी, फारसी, यूनानी, तिब्बी आदि अनेक वैद्यक ग्रन्थों का सारांश लेकर विषय प्रतिपादन किया है। पारद (पारे) कों सिद्ध करनेवालों के लिये अतीव उपयोगी है।	९००.००
१०७८	**बालतंत्र**– कल्याणवैद्य रचित, हिन्दी टीका सहित। इसमें बंध्याऔषध, वीर्यवृत्ति, गर्भाधान, रुद्रस्थान, सर्व ग्रह गृहीत बालरक्षा, ज्वरादिरोगचिकित्सा के अनुभवी प्रयोग वर्णित है।	१००.००
१०७९	**बृहन्निघण्टुरत्नाकर-(प्रथम भाग)**– पं. दत्तरामजी चौबे द्वारा संकलित, हिन्दी टीका सहित। इसमें शरीराध्याय, यंत्राध्याय, शस्त्रावचरणाध्याय, योग्यसूत्राध्याय, अष्टविधशस्त्रकर्माध्याय इत्यादि वर्णित है।	२२०.००
१०८०	**बृहन्निघण्टुरत्नाकर-(द्वितीय भाग)**– हिन्दी टीका सहित। इसमें क्षारपाकविधि, अग्निकर्म, दोषधातु मलवृद्धि,दोष वर्णन, ऋतुचर्या, दिनचर्या, रात्रिचर्या और नाड़ीदर्पणादि वर्णन भलीभांति किया है।	२५०.००
१०८१	**बृहन्निघण्टुरत्नाकर-(तृतीय भाग)**– पूर्वोक्त सर्वालंकारों से विभूषित विविध रोगों की चिकित्सा का संग्रह।	३००.००
१०८२	**बृहन्निघण्टुरत्नाकर-(चतुर्थ भाग)**– चिकित्साखण्ड पूर्वोक्त सर्वालंकारों से विभूषित।	१८०.००
१०८३	**बृहन्निघण्टुरत्नाकर-(पंचम भाग)**– रोगों का कर्म विपाक।	४५०.००
१०८४	**बृहन्निघण्टुरत्नाकर-(षष्ठ भाग)**– रोगों का चिकित्सा विभाग।	३००.००
१०८५	**बृहन्निघण्टुरत्नाकर-(सप्तम-अष्टम भाग)**–अर्थात् "शालिग्राम निघण्टु भूषण"। स्व. लाला शालिग्रामजी संकलित इस ग्रन्थ में संस्कृत, हिन्दी, बंगाली, मराठी, गुजराती, द्राविडी, तैलंगी, औत्कली, इंग्लिश, लैटिन, फारसी, अरबी आदि अनेक देशदेशांतरीय भाषाओं में सर्व औषधियों के नाम दिये है, तथा उनके गुणों का वर्णन औषधियों के चित्रों सहित दिया है। दो रंगों में।	७५०.००
१०८६	**बृहन्निघण्टुरत्नाकर**– आठों भागों का संपूर्ण सेट, चार जिल्दों में, साथ में "शालिग्रामौषधि शब्दसागर अर्थात् आयुर्वेदीय औषधिकोष" मुफ्त। कोरोगेटेड बॉक्स पैकिंग में।	२४००.००
१०९०	**भावप्रकाश**– तीनों खण्ड, भावमिश्र संगृहित। हिन्दी टीका सहित। हिन्दी	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	टीकाकार गो. वा. लाला शालिग्रामजी। संशोधक डॉ. कांतिनारायणजी मिश्र, आयुर्वेद विशारद A.L.L.M.(मद्रास)भूतपूर्व डायरेक्टर ऑफ आयुर्वेद(पंजाब)। इसमें शारीरिकनिदान, नाड़ीज्ञान, रसप्रकरण और अष्टांगचिकित्सा आदि वैद्यक संबंधी सभी विषय हैं।	१२००.००
१०९२	**भैषज्यरत्नावली**– हिन्दी टीका सहित। मूल रचयिता –श्री गोविन्ददासजी सेन, हिन्दी टीकाकार– स्व. वैद्य पं. शंकरलालजी। इसमें क्राथ, चूर्ण, अवलेह, आसव, अरिष्ठ आदि वनस्पतिजन्य प्रयोग और रस, धातु आदि के द्वारा सिद्ध किये रसायन आदि के अनेक प्रयोग हैं।	६००.००
१०९३	**मदनपालनिघण्टु**– वैद्यरत्न पं रामप्रसादजी राजवैद्य कृत, अत्युत्तम हिन्दी टीका सहित। इसमें औषधों के नाम व गुणदोष वर्णन है।	१००.००
१०९६	**माधवनिदान**– पं. दत्तरामजी चौबे कृत, हिन्दी टीका सहित। इसमें संपूर्ण रोगों के कारण, उत्पत्ति, लक्षण, संप्राप्ति का वर्णन है।	१२५.००
११०१	**योगतरंगिणी**– (त्रिमल्ल भट्ट कृत)– पं. दत्तरामजी चौबे कृत, हिन्दी टीका सहित। सर्व वैद्यक संहिताओं का सार संग्रह।	३००.००
११०२	**योगचिन्तामणि**– पं. दत्तरामजी चौबे कृत, हिन्दी टीका सहित। पाक चूर्ण गुटिका, क्राथ, घृत, तैल, रस, लेप और मलहम आदि अनुभव सिद्ध प्रयोग।	१२०.००
११०७	**रसरत्नसमुच्चय**– वाग्भट्टाचार्य विरचित। भिषग्भूषण पं. शंकरलालजी हरिशंकर कृत हिन्दी टीका सहित। रस,भस्म आदि सिद्धि का अद्वितीय ग्रन्थ।	६५०.००
१११०	**रसरत्नाकर**– सिद्धनाथ प्रणीत। समस्त रसग्रन्थों का शिरोभूषण। स्व. लाला शालिग्रामजी कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें रसादिकों की शोधनविधि व उनके गुण और प्रत्येक रोग की चिकित्सा है।	७५०.००
१११३	**रसायनविधि**– (हिन्दी में) वैद्यशास्त्री पं. गौरीशंकरजी द्वारा संग्रहीत। सोना, चांदी आदि तथा औषध बनाने की विधि, अनेक रागों की चिकित्सा, यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र और अंग्रेजी नुस्खे।	९०.००
१११६	**रसेन्द्रसारसंग्रह**– महामहोपाध्याय गोपालसिंहसूरि विरचित। वैद्यरत्न पं. रामप्रसाद राजवैद्य कृत हिन्दी टीका सहित। तीन खण्डों में रस, उपरस, धातु, उपधातुओं के मारण, शोधन, जारण तथा सम्पूर्ण रोगों की चिकित्सा वर्णित है।	५००.००
१११७	**रसेन्द्रपुराण**– वैद्यरत्न पं. रामप्रसादजी पटियाला राजवैद्य कृत, हिन्दी टीका सहित। इसमें रस, उपरस, धातु, उपधातुओं का शोधन, मारण तथा यंत्रादि विधान और पारद के विशेष संस्कार अद्भुत हैं।	४५०.००
१११५	**वंगसेन**– भिषक् शिरोमणि स्व. लाला शालिग्रामजी कृत हिन्दी टीका सहित। वैद्यक संबंधी समस्त विषयों के सिवाय यह ग्रन्थ चिकित्सा में प्रधान है।	५००.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
११२४	**विषतन्त्रचिकित्साप्रकाश**- हिन्दी टीका सहित। इसमें सभी विषों की पहचान और चिकित्सा वर्णित है।	१५.००
११४२	**वैद्यक-रसराजमहोदधि**-(प्रथम भाग)- भगत भगवानदासजी कृत, युनानी हिकमत, यूनानी दवा तथा फकीरों की जड़ी-बूटी और सन्तों की पुस्तकों का संग्रह	१७०.००
११४३	**वैद्यक-रसराजमहोदधि** -(द्वितीय भाग)- उपरोक्त विषयानुसार शरबत, पाक आदि की विधि सहित।	१९०.००
११४४	**वैद्यक-रसराजमहोदधि**-(तृतीय भाग)- अनेक नवीन रीतियों से जड़ी-बूटी द्वारा धातु आदिकों का शोधन, मारण, गुण, अनुपान तथा सब रोगों पर अन्यान्य अनेक उपाय।	१५०.००
११४५	**वैद्यक-रसराजमहोदधि**-(चतुर्थ भाग)- इसमें सर्व रोगों के लक्षण, निदान, चिकित्सा और पथ्थापथ्थ लिखे हैं।	२३०.००
११४६	**वैद्यक-रसराजमहोदधि**-(पंचम भाग)- इसमें प्राचीन ग्रन्थों के अच्छे-अच्छे नुस्खे तथा औषधों का विचार हैं।	२००.००
११४७	**वैद्यक-रसराजमहोदधि**- चारों भागों की एक जिल्द।	
११४८	**वैद्यक-रसराजमहोदधि** - संपूर्ण पांचों भागों की एक जिल्द।	७५०.००
११४९	**शरीरपुष्टिविधान**-भाषा- अर्थात् शरीर के सदा हृष्ट-पुष्ट बलिष्ठ होने की विधि। इसमें निदान, चिकित्सा व पाकादि प्रकरण भलीभांति वर्णित है।	३०.००
११५०	**शार्ङ्गधरसंहिता**- वैद्यरत्न पं. रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीका सहित। रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, प्रतीकार, सब प्रकार की धातुओं का मारण-शोधन आदि प्रयोग बहुत अजमाये हुए है और रसादि सेवन की विधि भी संयुक्त है।	३५०.००
११५१	**शालिग्रामौषधिशब्दसागर**- अर्थात् आयुर्वेदीय औषधिकोष। गो. वा. लाला शालिग्रामजी कृत।	१५०.००
११५७	**सिस्टम ऑफ आयुर्वेद**- (इंग्लिश में) पंजाब के आयुर्वेदज्ञ वैद्यरत्न पं. शिवशर्माजी की दिव्य लेखनी की कृति है। इसमें अन्य सब चिकित्सा प्रणालियों का पूर्ण रूप से खण्डन करके आयुर्वेद की प्राचीनता, मौलिकता, उपयोगिता, लोकप्रियता तथा अन्य महत्व बड़ी विद्वत्तासे स्थापन की गयी है।	१००.००
११६१	**सुश्रुतसंहिता** - चारों भागों का संपूर्ण सेट, दो जिल्दों में। स्व. पं. मुरलीधरजी शर्मा राजवैद्य कृत सान्वय, सटिप्पण, सपरिशिष्ठ हिन्दी टीका सहित। प्रथम भाग में सूत्रस्थान, द्वितीय भाग में निदानस्थान एवं शारीरस्थान, तृतीय भाग में चिकित्सास्थान एवं कल्पस्थान, चतुर्थ भाग में उत्तरतंत्र हैं। इसमें संपूर्ण रोगों का निदान, लक्षण और औषधियों के प्रचार वा प्रत्येक रोगपर क्वाथ, चूर्ण, रस और घी से अच्छे प्रकार से चिकित्सा वर्णित है।	१२००.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
११६२	**सुश्रुतसंहिता**– (प्रथम भाग)– सूत्रस्थान– उपरोक्त सर्वालंकारो सहित।	३५०.००
११६३	**सुश्रुतसंहिता**– (द्वितीय भाग)– निदानस्थान एवं शारीरस्थान– उपरोक्त सर्वालंकारो सहित।	२००.००
११६४	**सुश्रुतसंहिता**– (तृतीय भाग)– चिकित्सास्थान एवं कल्पस्थान– उपरोक्त सर्वालंकारो सहित।	४००.००
११६५	**सुश्रुतसंहिता**– (चतुर्थ भाग)– उत्तरतंत्र– उपरोक्त सर्वालंकारो सहित।	३५०.००
११७३	**हरितक्यादिनिघण्टु**– भावमिश्र कृत। राजवैद्य वैद्यरत्न पं. रामप्रसादात्मज विद्यालंकार पं. शिवशर्माजी कृत "शिवप्रकाशिका" नामक हिन्दी टीका सहित।	७५.००
११७६	**हितोपदेशवैद्यक**– जैनाचार्य श्रीकण्ठजी कृत, हिन्दी टीका सहित। इसमें ज्वरादि रोगों के विलक्षण लक्षण और अद्भुत चिकित्सा सविस्तर लिखी है। ज्वरादि रोगों का क्रम प्राचीन पद्धति से विचित्र है। आयुर्वेदोक्त रोगों के अतिरिक्त अनेकआधुनिक रोगों की भी रामबाण औषधियां लिखी है।	१८०.००
११७८	**होम्योपैथी**– (हिन्दी में)– लेखक डॉ. मुकेश बत्रा। (पेपर बॅक एडीशन)	६०.००

नीतिग्रन्थ

११९९	**चाणक्यनीतिदर्पण**– दोहा और हिन्दी टीका सहित।	६०.००
१२०२	**तमालदोषदर्पण**– हिन्दी टीका सहित। इसमें तमाखू के दोष दिखाये हैं।	६.००
१२०८	**दृष्टान्तमंजूषा**– इसमें ज्ञान, वैराग्य और भक्ति आदि विविध शिक्षामय २१३ दृष्टान्त हैं।	१२५.००
१२४१	**विदुरनीति और यक्षप्रश्नोत्तरी**– हिन्दी टीका सहित।	६०.००
१२५८	**स्वर्ग का विमान**– महात्माओं की ३२५अनुभूत शिक्षाओं का संग्रह। यथाथ नाम ग्रन्थ है। इसके ३२५ उपदेशों में एक भी उपदेश यथार्थ आचरण में आ जावे तो जीवन सार्थक हो जाता है।	२००.००

अलंकार ग्रन्थ

१२७४	**रसिकप्रिया**– कवि केशवदासजी कृत और सरदार कवि कृत हिन्दी टीका सहित। भाषा साहित्य का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ। इसमें रसिक पुरुषों के परमप्रिय कवित्त और सवैया छन्द वर्णित है।	३५.००

छन्द ग्रन्थ

१२९८	**श्रुतबोधरत्नाकर**– संस्कृत टीका सहित। महाकवि श्री कालिदास और श्री भट्ट केदार विरचित। इसके अभ्यास से सभी छन्द समझ में आ जाते हैं।	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य

कोष ग्रन्थ

१३०४ त्रिकाण्डशेष– प्राचीन कोश, सारार्थचन्द्रिका नामक संस्कृत टीका सहित। अमरकोश की पूर्णता इसीसे होती है। (जीर्ण)

काव्य ग्रन्थ

१३४५ भामिनीविलास– जगन्नाथजी प्रणीत तथा हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक पं. महावीर–प्रसादजी द्विवेदी कृत हिन्दी टीका सहित। २०.००

१३४७ भोजप्रबन्ध– पं. श्यामसुंदरलालजी त्रिपाठी कृत, हिन्दी टीका सहित। ८०.००

१३४८ भोजप्रबन्ध– केवल भाषा। (जीर्ण)

१३४९ भोज और कालिदास– हिन्दी टीका सहित। राजा भोज और कालिदास के चातुर्य्य की उत्तमोत्तम कथाओं का संग्रह। १०.००

संस्कृत नाटक ग्रन्थ

१३९६ हनुमन्नाटक– हिन्दी टीका सहित। इस महा नाटक को राजा भोज ने समुद्र से निकाला और उनकी सभा के विद्वान् दामोदर मिश्र ने इसका संग्रह किया है। १२०.००

भाषा नाटक ग्रन्थ

१४२४ माधवानलकामकंदलानाटक – स्व. कविवर लाला शालिग्रामजी कृत। जयंती अप्सरा और माधवानल का विलाप व विपत्ति, कामसेन की सभा, कामकंदला का श्रृंगार, चतुराई और राजा विक्रम के कटक की शूरता और दृढ़ता का वर्णन। (जीर्ण)

१४३६ रामलीलारामायण– स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित। तुलसीदास कृत रामायण के सातों काण्डों को रामलीलापयोगी दोहा, चौपाइयों की कथा। प्रसंग व लीला क्रमानुसार लिखकर रामलीला का सरस अभिनय गोसाईजी के शब्दों में। २५०.००

रामानुज सम्प्रदाय ग्रन्थ

१४७० आलवन्दारस्तोत्र– सान्वय हिन्दी टीका सहित। ३०.००

१४७६ गोदाभक्तिचालीसा – ५.००

१४८४ नारदपञ्चरात्र– (भारद्वाजसंहिता) श्री. पं. बाबूलालजी शुक्ल शास्त्री एम्. ए. साहित्याचार्य–कालिदास अकादमी शोध विभागाचार्य द्वारा सम्पादित तत्त्वप्रकाशिका अभिनव हिन्दी टीका सहित। १३०.००

१५१२ रामपटल– हिन्दी टीका सहित। वैष्णवों के नित्यकर्मों में उपयोगी। १०.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
१५१४	**रामचरणचिह्नावली-** (जीर्ण)	
१५२९	**द्राविडाम्नायदिव्यप्रबन्ध-** (संस्कृत अनुवाद) अनुवादक श्री कांची जगदाचार्य सिंहासनाधीश प्रतिवादि भयंकर श्रीमदण्णङ्गराचार्यजी। दिव्य प्रबन्ध को द्रविड वेदान्त भी कहते है, जिसके मुदलियार नामक प्रथम सहस्र का यह अनुवाद है। इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ के अबतक द्रविड भाषा में ही होने के कारण संस्कृत विद्वान इसके परिज्ञान से वञ्चित ही रहते थे, इस बाधा को विद्वान अनुवादक महोदय ने दूरकर महान् उपकार किया है। (सजिल्द) (जीर्ण)	
१५३४	**श्रीवैष्णवधर्मरत्नाकर-** बावली ग्राम निवासी श्रीमान् गोपालदासजी कृत, हिन्दी टीका सहित।	
१५६३	**सुदर्शनशतक-** हिन्दी टीका और सुदर्शन कवच सहित।	१०.००
१५६६	**(बृहत्) स्तोत्ररत्नावली-** प्रथम भाग	१८०.००

बल्लभ (पुष्टि) मार्गीय ग्रन्थ

१५७१	**चौरासी वैष्णव की वार्ता-** सरल व्रज भाषा में।	२५०.००
१५७३	**दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता-** सरल व्रज भाषा में।	४००.००
१५७७	**वल्लभपुष्टिप्रकाश-** वल्लभकुल संप्रदाय की सात घरन की दिन की सेवा, भोग, श्रृंगार, उत्सव आदि का पूरा वर्णन और चित्र भी है। श्रृंगार,आरती, हिंडोला आदि के भी चित्र देकर पुस्तक को ऐसा उपयोगी बना दिया है कि देखते ही चकित होना पड़ता है। गो. श्री. गोस्वामि देवकीनन्दनाचार्यजी महाराज की आज्ञानुसार मुद्रित।	३००.००

मन्त्र शास्त्र ग्रन्थ

१५८२	**अघोरीतन्त्र-** सरल भाषा में। तन्त्र के उपयोगी मन्त्र-तन्त्रसाधन विधि सरल रीति में वर्णित है।	६०.००
१५८३	**अनुष्ठानप्रकाश-** मूलमात्र - संस्कृत में। स्व. पं. चतुर्थीलालजी कृत। नैमित्तिक कर्म में परमोपयोगी।इसमें अकड-मकडचक्र, दीक्षापुरश्चरण, सूर्यचन्द्रादि ग्रहणों में पुरश्चरण तथा सङ्कल्पादि संग्रहीत है, और अनेक प्रकार के देवी देवताओं के अनुष्ठान लिखे हैं। सजिल्द	५००.००
१५८४	**अष्टसिद्धि-** हिन्दी टीका सहित। गुरुपदिष्ट मार्ग से अभीष्ट फलप्रद ग्रन्थ।	१२०.००
१५८५	**आश्चर्यदीपिका-** यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र तथा ताश, गंजीफा, शतरंज आदि के विविध खेल और हाथ की सफाई, बाजीगरी आदि के आश्चर्यकारक अनेकों चुटकुले देखनेवालों को चकित कर देते हैं।	
१५८६	**आश्चर्ययोगमालातन्त्र-** सिद्ध नागार्जुनजी प्रणीत, स्व. बलदेवप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें अनेक प्रकार के योगानुकूल षट्कर्म और गर्भ इत्यादि का औषधि प्रयोग है।	१५.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
१५८७	**आसुरीकल्प**– हिन्दी टीका सहित। तन्त्रज्ञान की पुस्तक।	८.००
१५८८	**(बृहत्) इन्द्रजाल**– अर्थात् कौतुकरत्न भाण्डार। (संस्कृत और भाषा) मन्त्र, तन्त्र, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण प्रयोग और वैद्यक तथा समस्त कार्यों के सिद्ध करनेवाले १३८ यन्त्रों सहित।	२००.००
१५८९	**उच्छिष्टगणपतिपञ्चाङ्ग तथा उच्छिष्टचाण्डालिन्युपासना** – मूलमात्र केवल संस्कृत में। सजिल्द	५०.००
१५९०	**उड्डिशतन्त्र**– रावण विरचित मूल तथा मुरादाबाद निवासी श्यामसुन्दरलालजी त्रिपाठी कृत। हिन्दी टीका सहित।	५०.००
१५९२	**कामरत्न**– योगेश्वर नित्यनाथजी प्रणीत और स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें कामशास्त्रादि विषय और रोगों की औषध तथा वाजीकरण औषध अनुभूत है और वशीकरण प्रयोग भी है।	३००.००
१५९३	**क्रियोड्डीशतन्त्र** – इन्द्रजित विरचित, हिन्दी टीका सहित। इस ग्रन्थ में तात्कालिक सिद्धि तथा प्रत्येक प्रकार के मन्त्रादि वर्णित है।	६०.००
१५९४	**गायत्रीपुरश्चरणविधि**– मूलमात्र संस्कृत में।	५.००
१५९५	**गायत्रीपञ्चाङ्ग**– इसमें गायत्रीचक्र कल्पपद्धति, उपनिषद् गायत्रीतत्त्व, गायत्रीकवच, गायत्रीस्तवराज, गायत्रीपञ्जरस्तोत्र, गायत्रीसहस्रनाम और गायत्रीपटलादि संग्रह है। मूलमात्र–केवल संस्कृत में।	४५.००
१५९६	**गायत्रीतन्त्र**– हिन्दी भाष्य सहित। इसमें गायत्री का कवच, हृदय, रहस्य आदि उपयुक्त विषय है।	४०.००
१५९८	**गुप्तसाधनतन्त्र**–शिवप्रणीत, स्व.पं. बलदेवप्रसादजी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित	७०.००
१५९९	**गौरीकान्चालिकातन्त्र**– हिन्दी टीका सहित।	४५.००
१६०३	**चौबीसगायत्री**– स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित।	२५.००
१६०४	**जादूबंगाला**– जादू करने के छोटे–छोटे खेल।	१०.००
१६०६	**दत्तात्रेयतन्त्र**– हिन्दी टीका सहित। यह औषधि प्रयोग इत्यादि २४ पटलों में वर्णित है।	५०.००
१६०७	**दुर्गासप्तशती**–संस्कृत में। संपूर्ण घटनाओं के मूर्तिमान चित्रों सहित, बड़े अक्षरों में	५०.००
१६०८	**दुर्गापाठ भाषा**–	१५.००
१६०९	**दुर्गासप्तशती**–मूलमात्र–संस्कृत में। पूजाविधि, प्रतिश्लोक के बीजमंत्र, प्रयोगविधि, देवीकवच, ब्रह्मोक्तदेवीकवच, अर्गला, कीलक, नवार्णविधि, रात्रिसूक्त, सप्तशतीन्यास, दुर्गापाठ, उत्तरन्यास, देवीसूक्त, नवार्णसन्निवेदन, प्राधानिकरहस्य, वैकृतिकरहस्य, मूर्तिरहस्य सहित। ९ पंक्ति, बड़े अक्षरों में। पत्राकार–	१६०.००
१६१०	**दुर्गासप्तशती**– मूलमात्र – संस्कृत में। उपरोक्त ग्रन्थ। सजिल्द –	१८०.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
१६१३	**दुर्गासप्तशती**– मूलमात्र –संस्कृत में। बीजमन्त्र सहित। ताबीजी रेशमी जिल्द	५०.००
१६१६	**दुर्गासप्तशती**– सप्तटीका सहित। संस्कृत में। दुर्गाप्रदीप्त, गुप्तवती, चतुर्धरी, शान्तनवी, नागोजीभट्टी, जगचन्द्रिका तथा दशोद्धार ये सात टीकाएं हैं।	
१६१७	**दुर्गासप्तशती**– पं. रामेश्वरजी भट्ट कृत सरल हिन्दी टीका सहित।	१८०.००
१६२१	**दुर्गोपासनाकल्पद्रुम**– बृहज्ज्योतिषार्णवान्तर्गत। (मूलमात्र–केवल संस्कृत में) अनेक देवता, दैत्य, ऋषि–मुनि तथा शैलपुत्री आदि नवदुर्गा एवं सप्तशतीपाठ व मूर्ति रहस्यादि ग्रन्थोक्त नाना देवियों और प्रसंगों के चित्रों सहित रुद्रचण्डी आदि विविध अद्भुत प्रयोग, संपूर्ण दुर्गाकल्प, पूजा–होमादि प्रकार, मन्त्रविभाग, पाठक्रम, तत्काल सिद्धिकारक नाना पुरश्चरण, दीक्षा, यज्ञ आदि दुर्गोपासना संबंधी समस्त चमत्कारपूर्ण विषय हैं। दुर्गोपासकों के लिये कल्पद्रुम ही है। (सजिल्द)–	५००.००
१६२२	**धन्वन्तरितन्त्रशिक्षा**– हिन्दी टीका सहित। देवाधिदेव महादेव प्रणीत। इस ग्रन्थ में तन्त्र के विषय बहुत अच्छे ढंग से वर्णित है।	१००.००
१६२४	**पञ्चदशीतन्त्र**– हिन्दी टीका सहित। यह सर्व सिद्धिकारक है।	१५.००
१६२५	**प्रत्यंगिरापञ्चाङ्ग**– केवल संस्कृत में। इसमें पटल, पद्धति, कवच तथा सहस्रनाम और स्तोत्र का संग्रह प्रत्यक्ष फलदायक है।	
१६२६	**पुरश्चरणदीपिका**– (मूलमात्र – केवल संस्कृत में) पुरश्चरणोपयोगी गुरु, शिष्य, आसन, माला, देश, काल, जप और हवन आदि का उत्तमता से निरूपण।	४.००
१६२८	**बटुकभैरवोपासनाध्याय**– (बृहज्ज्योतिषार्णवान्तर्गत) मूलमात्र – केवल संस्कृत में। इसमें संपूर्ण भैरवों की उपासना का मन्त्रोद्धार, पुरश्चरण, कवच, पूजा, सहस्रनाम, स्तवादि का संग्रह है।	१८०.००
१६२९	**बृहत्साबरतन्त्र**– शिवोक्त, सविधान। हिन्दी टीका सहित।	४०.००
१६३०	**महालक्ष्मीपूजापद्धति**– हिन्दी टीका सहित।	३०.००
१६३१	**महायक्षिणीसाधन**– स्व. वि. वा. पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित। यक्षिणीसाधनादि (२२५) विषय।	७०.००
१६३२	**महानिर्वाणतन्त्र**– श्री महेश्वरभगवत् प्रणीत, हिन्दी टीका सहित। इसके १४ उल्लासों में शिव–पार्वतीसंवाद द्वारा युगधर्म, कलि में तन्त्र का प्राधान्य, अनेक तन्त्र, देवता व सम्प्रदाय, परब्रह्मोपासन, शक्ति की उपासना, वीरसाधना की सफलता, कौलप्रशंसा, वर्णाश्रमविधि, भैरवीचक्र, संन्यासविधि, संस्कारविधि, दीक्षाविधान, शिष्य को अमृतदान विधि, शान्ति, प्रायश्चित्त, धर्माधर्म, व्यवहारिक न्याय विभाग, राजा–प्रजा का व्यवहार, महाकालिसाधन, शिवपूजा विधान, मुक्ति का विचार, साधुलक्षण, अवधूतलक्षण और सर्वधर्म निर्णयसार आदि सभी परमोपयोगी विषय हैं।	५००.००
१६३३	**मन्त्रमहार्णव**– मन्त्रशास्त्र का महान ग्रन्थ। केवल संस्कृत में। इसमें इष्टदेवता,	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	दैत्य, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, योगिनी, अप्सरा, देवकन्या, नागकन्या, राक्षस, प्रेतादिक का सम्पूर्ण विधान अर्थात् मन्त्रोद्धार, न्यास, ध्यान, पीठपूजा, पीठशक्ति, यन्त्रोद्धार, देवासनप्रतिष्ठा, आवरणपूजा, षोडशोपचारपूजा, स्तोत्रादि समग्र पञ्चाङ्ग पद्धति के अनुसार एक ही स्थानपर मिलेंगे। समस्त मन्त्राशास्त्र इस महार्णव के भीतर आ गया है। मूलमात्र संस्कृत में। कपडे की मजबूत जिल्द।	१०००.००
१६३४	**मन्त्रमहोदधि**- संस्कृत टीका और सचित्र ९८ यन्त्रों सहित। इसमें गणेशमंत्र, कालिकामंत्र, तारामंत्र, ब्रह्मोपासिततारा, छिन्नमस्ता, यक्षिणी, वाराही, धूमावती, कर्णपिशाचिनी, स्वप्नेश्वरी, बाला, त्रिपुरसुंदरी, अन्नपूर्णेश्वरी, मङ्गलपूर्णक श्रीविद्या, श्रीविद्या का परिवार, हनुमन्मंत्र, विष्णुमंत्र, रोग-दारिद्र नाशक रविमंत्र, महामृत्युन्जय-मंत्र, अभीष्टसिद्धिकार्तवीर्यार्जुनमंत्र, कालरात्रि मंत्रविधि, कूटमंत्र, सर्व देवों के यंत्र, नित्यपूजा, नित्यार्चनविधि, पवित्रपूजनार्चन, मन्त्रशुद्धि और शांत्यादि षट्कर्म इत्यादि मंत्रों का उद्धारादि उत्तम प्रकार से वर्णित है। केवल संस्कृत में। सजिल्द -	४००.००
१६३७	**मन्त्रविद्या** - श्री महादेव प्रणीत। इसमें मोहन, उच्चाटन आदि षट्कर्म, योगिनी-साधन, पशुपक्षी आदि का भाषा ज्ञान है।	८०.००
१६३८	**माहेश्वरीतन्त्र** - हिन्दी टीका सहित। इसमें मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटनादि विधि भली प्रकार वर्णित है।	१५.००
१६३९	**मेरुतन्त्र**- मूलमात्र - केवल संस्कृत में। तन्त्रोंपर प्रायः लोग यह दोष लगाते हैं कि, यह वाममतप्रधान होने से वैदिक लोगों के अनुष्ठान के योग्य नहीं, किन्तु इस सर्वश्रेष्ठ "मेरुतन्त्र" में अनेक वैदिक प्रयोग ऐसे उत्तम हैं कि, उक्त दोष कभी नही लग सकते। अपने नामानुसार सर्व प्रधान हैं। सजिल्द-	६००.००
१६४०	**यन्त्रचिन्तामणि**- हिन्दी टीका सहित। इसमें वशीकरण,आकर्षण, स्तम्भनादि षट्प्रयोग, शांतिपौष्टिकादि तथा गर्भ-बालरक्षाकारक यंत्रों का विशेष रूप से वर्णन है	
१६४२	**योगिनी तन्त्र**- हिन्दी टीका सहित। इसमें भगवती की उपासना, मन्त्र, पुरश्चरण, तथा अनुष्ठान विधि और महामायाओं के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन, प्राचीन तीर्थों का माहात्म्य, मंत्र-शास्त्र के विधान, कर्मकाण्ड इत्यादि भलीभांति वर्णित हैं। इसके अत्यंत सरल विधान शीघ्र सिद्धिकारक हैं।	४००.००
१६४४	**रुद्राक्षधारणविधि**- हिन्दी टीका सहित। शिवभक्तों के लिये परमोपयोगी।	१०.००
१६४५	**रुद्रयामलतन्त्र**- संक्षिप्त। हिन्दी टीका सहित।	३०.००
१६४७	**वन्ध्यातन्त्र**- हिन्दी टीका सहित। इसमें वन्ध्या स्त्री को संतति होने का उपाय भली प्रकार से लिखा गया है।	३०.००
१६४८	**विज्ञान और बाजीगरी**- अपूर्व जादू के चित्रों सहित खेल।	१५.००
१६४९	**शाक्तप्रमोद**-मूलमात्र- केवल संस्कृत में। दशमहाविद्या का पञ्चाङ्ग और पांचों	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	देवताओं का पञ्चाङ्ग। राजा देवनन्दन संग्रहीत। दशमहाविद्या, कुमारी, दुर्गा, शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु इनके पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम, स्तवराज, स्तोत्रादि, पञ्चाङ्ग, द्वादशाङ्ग आदि उपासनोपयोगी १८४ विषयों का एकत्र संग्रह, यंत्र सहित।	५००.००
१६५२	**सिद्धशंकरतन्त्र**– हिन्दी टीका सहित। सनतकुमार के मत से शिवपूजन विधि, पञ्चब्रह्मविधान, तत्पुरुष विधान,सद्योजात विधान आदि सर्व सिद्धिदायक अपूर्व प्रयोग।	३०.००
१६५३	**सौभाग्यलक्ष्मी**– हिन्दी टीका सहित। महालक्ष्मीदेवी को प्रसन्न करने के लिये अनेक मंत्र, यंत्र, तंत्र, अनुष्ठान और सदाचार।	६०.००
१६५४	**हनुमदुपासना**– बृहज्ज्योतिषार्णवान्तर्गत। मूलमात्र – केवल संस्कृत में। (सांगोपांग हनुमदाराधना) इसमें पञ्चमुखी–एकमुखी हनुमत्कवच, हनुमत्सहस्रनाम आदि ३४ विषय हैं। अत्युत्तम सजिल्द गुटका।	२००.००

स्तोत्रग्रन्थ

१६५८	**अन्नपूर्णास्तोत्र**– हिन्दी टीका सहित।	८.००
१६६३	**आदित्यहृदय**– हिन्दी टीका।	२५.००
१६६७	**इन्द्राक्षीस्तोत्र**– केवल संस्कृत में।	१०.००
१६८२	**श्रीगणेशसहस्रनामावली**–	६.००
१६८३	**श्रीगणेशचालीसा**–	४.००
१६८५	**गंगाष्टक**– (अति जीर्ण)	
१६८७	**गंगालहरी**– पं. राधाकृष्ण शर्म कृत साम्वय भाषानुवाद तथा सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार प्रणीत सप्तश्लोकी भाषापद्य समेत।	२०.००
१६९५	**गिरीशस्तोत्र**– शिवस्तुति। संस्कृत में।	२.००
१७००	**गोपाल सहस्रनाम**– राधास्तोत्र सहित – बड़ा अक्षर – केवल संस्कृत में। साधा गुटका –	१५.००
१७००ब	**उपरोक्त गोपाल सहस्रनाम**– केवल संस्कृत में। रेशमी जिल्द –	३०.००
१७१५	**दुर्गासप्तश्लोकी**–दुर्गाजीकी आरती, कुञ्जिकास्तोत्र, देवीक्षमापनस्तोत्र सहित।	५.००
१७१६	**देवीकवच**– हिन्दी टीका सहित। इसमें देव्यपराधक्षमापन स्तोत्र, आनन्दलहरी तथा अन्पूर्णा स्तोत्र तीनों एकत्र हैं।	
१७१७	**देवीसहस्रनामावली**–	१०.००
१७१९	**देवीस्तोत्रपञ्चक**– केवल संस्कृत में। अन्नपूर्णा, बगलामुखी, लक्ष्मी, त्रैलोक्य मंगल लक्ष्मी और भुवनेश्वरी इन महादेवीयों के शीघ्र फलप्रद स्तोत्र।	१०.००
१७२१	**नवग्रहस्तोत्र तथा विष्णुपञ्जर स्तोत्र**– दोनों एकत्र। केवल संस्कृत में।	५.००
१७२३	**श्रीनवग्रहचालीसा**–	५.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
१७२४	**नारायणकवच**- हिन्दी टीका सहित।	
१७२५	**नृसिंहसहस्रनाम**- केवल संस्कृत में।	२०.००
१७२६	**नृसिंहकवच**- केवल संस्कृत में।	५.००
१७२९	**पञ्चमुखी और एकमुखी हनुमत्कवच**- केवल संस्कृत में।	१०.००
१७३७	**बगलामुखीस्तोत्र**- केवल संस्कृत में।	१०.००
१७३८	**बटुकभैरवस्तोत्र**-केवल संस्कृत में।	१२.००
१७४०	**बृहत्स्तोत्ररत्नाकर**- (स्तोत्र संख्या २२४) केवल संस्कृत में। शिव, गणपति, विष्णु, देवी, सूर्य, राम, वेदान्त, गंगादि सरिता इत्यादि के भक्तिमय स्तुतिवर्णन। नित्यपाठोपयोगी, बड़े अक्षरों में।	२५०.००
१७४७	**महामृत्युञ्जयजपविधि**- हिन्दी टीका सहित।	२०.००
१७४८	**महालक्ष्मीस्तोत्र**- केवल संस्कृत में।	
१७४९	**महाविद्यास्तोत्र**- केवल संस्कृत में।	
१७६०	**राधासहस्रनामस्तोत्र**- केवल संस्कृत में। साधा गुटका -	१५.००
१७६०ब	**उपरोक्त राधासहस्रनामस्तोत्र**- केवल संस्कृत में। रेशमी जिल्द -	२५.००
१७६५	**रामस्तवराज**- अक्षरार्थ दीपिका, हिन्दी टीका सहित। बारामास की पाठविधि तथा माहात्म्य सहित।	३०.००
१७६९	**रामरक्षास्तोत्र**- हिन्दी टीका सहित।	१०.००
१७८४	**लक्ष्मी-नारायणहृदय**- लक्ष्मीदेवी की स्तुति। केवल संस्कृत में।	१०.००
१७८५	**ललितानित्यसपर्यापद्धति**- केवल संस्कृत में।	५.००
१७९२	**विष्णुसहस्रनाम-भाषा छन्द**- सादी जिल्द-	१०.००
१७९२ब	**विष्णुसहस्रनाम-भाषा छन्द**- उपरोक्त। रेशमी जिल्द-	१५.००
१७९३	**विष्णुसहस्रनाम**- चित्र सहित, बड़ा अक्षर। केवल संस्कृत में। सादी जिल्द-	३०.००
१७९३ब	**विष्णुसहस्रनाम**- उपरोक्त। केवल संस्कृत में। रेशमी जिल्द-	५०.००
१७९४	**विष्णुसहस्रनामावली**- पुष्प तथा तुलसी आदि भगवानपर अर्पण करने के लिये सुगमता के साथ पृथक्-पृथक् नाम।	३०.००
१८०२	**विष्णुपूजनविधि**- हिन्दी टीका सहित।	१०.००
१८०४	**वेंक्टेशसहस्रनामावली**-	
१८११	**शनिमृत्युञ्जयस्तोत्र**- केवल संस्कृत में।	१०.००
१८१२	**शिवस्तोत्र**- उपमन्यु कृत। हिन्दी टीका सहित।	५.००
१८१४	**शिवताण्डवस्तोत्र**- मूल। केवल संस्कृत में।	५.००
१८१५	**शिवताण्डवस्तोत्र**- संस्कृत व्याख्या, गद्य और पद्य में, हिन्दी टीका सहित।	२५.००
१८१८	**शिवसहस्रनाम**- स्व. वि. वा. पं.ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित।	८.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
१८२२	**शिवमहिम्नस्तोत्र**– सान्वय हिन्दी टीका सहित।	८.००
१८२४	**शिवपार्थिवपूजा**– केवल संस्कृत में।	५.००
१८२६	**शिवसहस्रनामावली**–	१०.००
१८२९	**श्रीमहालक्ष्मीपञ्चाङ्ग**– केवल संस्कृत में। इसमें १) लक्ष्मीपटल, २) लक्ष्मी-नित्यपूजापद्धति, ३) लक्ष्मीकवच, ४) महालक्ष्म्यष्टोत्तर सहस्रनाम, ५) लक्ष्मीस्तोत्र यह पञ्चाङ्ग और तंत्रोक्त लक्ष्मीकवच, सिद्धिलक्ष्मी स्तोत्र तथा श्री वागीश्वरी स्तोत्र इन शीघ्र सिद्धिदायक अपूर्व स्तोत्रों का संग्रह हैं।	३५.००
१८३०	**श्रीसत्यनारायणकथाचालीसा**–	४.००
१८३१	**श्रीकृष्णंचालीसा**–	५.००
१८३२	**श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्**– केवल संस्कृत में।	५.००
१८३३	**श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामात्मकस्तोत्रम्**– केवल संस्कृत में।	५.००
१८३६	**सन्तानगोपालस्तोत्र**– केवल संस्कृंत में।	५.००
१८३८	**सीतासहस्रनाम**– हिन्दी टीका सहित।	६.००
१८४०	**सूर्यसहस्रनामावली**–	
१८४२	**सूर्यकवच**– हिन्दी टीका सहित।	५.००
१८५१	**हनुमत्सहस्रनाम**– केवल संस्कृत में।	३.००
१८५२	**हनुमद्वन्दीमोचन**– तथा एकमुखी हनुमत्कवच स्तोत्र।	५.००

श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदास कृत रामायणादि ग्रन्थ

१८५८	**तुलसीकृत रामायण**– लवकुशकाण्ड सहित। स्व. विद्यावारिधि पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत, प्रत्येक दोहा, चौपाई की संजीवनी नामक सरल हिन्दी टीका सहित। इसमें अति उत्तम संपूर्ण क्षेपकों के अर्थ, माहात्म्य, तुलसीदासजी का जीवनचरित्र, गूढ़ार्थ, प्रमाणित शङ्कासमाधान, रामवनवास तिथिपत्र, कोष, हनुमानजी का चित्र और सूर्यवंश का वृक्ष भी है। आर्ट पेपरपर कलात्मक रंगीन चित्रों सहित, बड़ा अक्षर, ग्लेज कागज़, टिकाऊ कवर से सुशोभित सुंदर जिल्द। कुल पृष्ठ संख्या १३५२, साईज–१३.५" X ९.५" कोरोगेटेड बॉक्स पैकिंग में। ग्राहकों की निरंतर मांग के कारण अधिक सुपिरिअर कागज में यह संस्करण छापा गया है व जिल्द की मजबूती भी बढ़ाई गयी है, अतः इसका मूल्य होगा–	१४००.००
१८५८ब	**तुलसीकृतरामायण**– राजसंस्करण – संपूर्ण आठों काण्ड मैपलिथो पेपरपर छपी हैं। लाल मखमल की सुपुष्ट मनोहर जिल्द। कोरोगेटेड बॉक्स पैकिंग में।	१८००.००
१८५९	**तुलसीकृतरामायण**– लवकुशकाण्ड सहित। स्व. विद्यावारिधि पं. ज्वाला-प्रसादजी मिश्र कृत, संजीवनी टीका सहित। संपूर्ण क्षेपकों के अर्थ, माहात्म्य,	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
	तुलसीदासजी का जीवन-चरित्र, गूढ़ार्थ, प्रमाणित शङ्कासमाधान, रामवनवास तिथिपत्र, हनुमानजी का चित्र और सूर्यवंश का वृक्ष। कलात्मक रंगीन चित्रों सहित. मध्यम अक्षरों में, [illegible] कव्हर से सुशोभित सुन्दर जिल्द। कुल पृष्ठ संख्या १५३६, साईज-१०" X ७.५"। कोरोगेटड बॉक्स पैकिंग में।	११००.००
१८७८	**हनुमानचालीसा-** (अंग्रेजी में) अंग्रेजी अनुवाद और टिप्पणियों सहित। देवनागरी लिपी, रोमन लिपी व अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रत्येक चौपाई के वर्णन के प्राचीन शैली में चित्र। नैचुरल शेड मैपलिथो कागजपर दो रंगों में नयनाभिराम छपाई। हनुमानजी के विभिन्न मुद्राओंवाला मनमोहक कव्हर।	२५.००
१८७९	**हनुमानचालीसा-** संकटमोचन सहित।	२.००
१८९३	**अहिरावणलीला-** सिया संदेश, हनुमन्नाटक तथा राम करुणा नाटक सहित।	६.००
१८९७	**गोपालविलास-** गोपालदास विरचित श्रीकृष्ण परमात्मा का पवित्र चरित्र। वात्सल्य, करुणा और शान्ति आदि रसों की अधिकता तथा श्रृंगाररस की न्यूनता होने से श्रृंगार प्रधान कृष्णचरित्रों से विलक्षण है। (जीर्ण)	
१९०२	**प्रेमसागर-** पं. लल्लूलालजी कृत। श्रीकृष्ण आनन्दकन्द परब्रह्म परमेश्वर की आद्योपान्त सुखमय परमरमणीक, भागवत दशम स्कन्ध की कथा वर्णित है।	
१९०५	**बजरंगबाण-** हनुमान साठिका सहित।	५.००
१९०७	**भजनरामायण-** भगत भगवानदासजी कृत। भजनों में रामगुण वर्णन बड़ा ही रोचक है।	२५.००
१९१३	**रामरहस्यनाटक-** रामचरितमानस के भावों को लेकर गद्य-पद्य में रामलीला का वर्णन।	१५.००
१९२५	**विश्रामसागर-** ऐतिहासिक कृष्णायन तथा रामायण प्रसंग सहित। श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराणों का सार लेकर सत्संग, भक्तियोग, व्रत, माहात्म्य, ऋषि-मुनि तथा हरिभक्त महाराजाओंके चरित्र, नृसिंहावतार और श्रीकृष्णावतार, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामावतार की कथा का विस्तार पूर्वक वर्णन। केवल दोहा, चौपाई में।	२००.००
१९३६	**हनुमानचालीसा- संकटमोचन-** ताबीजी साईज में।	५.००
१९३७	**हनुमानबाहुक-** हिन्दी टीका सहित।	५०.००
१९३९	**हनुमद्वन्दीमोचन-** तथा एकमुखी हनुमत्कवचस्तोत्र।	५.००

हिन्दी काव्यादि ग्रन्थ

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
१९६६	**गणेशपुराण-** मोतीलालजी कृत।	
१९८३	**जगदम्बसाठिका-** श्रीमज्जगज्जननी देवीजी की स्तुति, भक्ति, रसपूर्ण परमोत्तम कवित्त, सवैया आदि छन्दों में वर्णित।	४.००

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
१९९०	**दुर्गाचालीसी**– दुर्गाजी की स्तुति उद्धव–गोपी संवाद सहित।	४.००
१९९२	**द्रौपदीपचीसी**– पं. शारदाप्रसाद अग्निहोत्री निर्मित। (जीर्ण)	
२००६	**पिनाकोत्सव**– अर्थात् धनुषभंग। (जीर्ण)	
२०३४	**माधवभक्तिरहस्य**– मुन्शी माधवरामजी कृत भक्ति के तीन ग्रन्थ।	४५.००
२०९९	**सूर्यपुराणादि २२५ रत्न**– अति उत्तम।	१६.००
२१०१	**सूर्यवंश का वृक्ष तथा हनुमानजी का चित्र।**	५.००

आल्हाछन्द में उल्था और लड़ाई आदि

२११३	**अनंगपाल पृथ्वीराज का समयवर्णन** –	८.००
२११४	**आल्हाखण्ड**– आल्हा, ऊदल, पृथ्वीराज, जयचन्द आदि क्षत्रियों का उद्भट युद्ध, ५२ लड़ाइयों में। सुन्दर अक्षर, ग्लेज कागजपर।	६००.००

संगीत - राग - गद्य - पद्य

२१३६	**अनुभवप्रकाश**– योगेश्वर श्री १०८ बनानाथजी कृत। मारवाडी भाषा में। अनेक रागों में वेदान्तोपदेश।	१००.००
२१४२	**आरतीसंग्रह**– गणपति, शिव, विष्णु, देवी, सत्यनारायण, बालाजी आदि देवताओं की आरतियों का परिवर्द्धित संग्रह।	२०.००
२१७०	**चौतालफागसंग्रह**– चौताल ९९, धमारी ३६, बेलवारा ६, लेज ३, होरी ३६ आदि का नूतन ढंग से निर्माण।	३५.००
२१८५	**नरसीमेहता का मामेरा**– बड़ा। नरसी मेहता की नान्हीबाई का भक्तोद्धारक भगवान ने मामेरा किया उसका वर्णन। (मारवाडी भाषा में)	१००.००
२२३४	**भजनरत्नावली**– बड़ी। इसमें प्राचीन महात्माओं के रचे अनेक रागरागिनियों में राम–कृष्ण के भजनों का अनुपम संग्रह।	१५०.००
२२४०	**भरथरीचरित्र**– अवश्य संग्राह्य, जिसे पढ़ने से आनन्द होता है।	१५.००
२२४८	**रससागर**– (होली के सुंदर फाग) श्री भगीरथजी शुक्ल योगी द्वारा संकलित तथा संपादित ५२३ श्रेष्ठतम फागों का सुरुचिपूर्ण अपूर्व संग्रह एवं संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण।	१७०.००
२२५७	**रागरत्नाकर**– अर्थात् भक्ति चिन्तामणि, रागमाला सहित। इसमें अति चटकीले भक्तिमय भजन–गान के २०००पदों का छः राग ३६ रागिनियों में अतिउत्तम संग्रह है। रेक्झिन की मजबूत जिल्द।	२२०.००
२२६७	**रुक्मिणीमङ्गल**– (बड़ा) पद्मभक्त कृत, मारवाडी भाषा में। अर्थात् रुक्मिणीजी का विवाह वर्णन।	१५०.००

सूची क्र	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
२२७८	**श्रीशनैश्चर कथा**– राघवदास कृत	१०.००
२२८३	**श्रीशनैश्चर कथा** – पं. श्रीराम प्रतापजी कृत।	३५.००
२२९८	**श्रीहनुमानमूदड़ी तथा मुद्रिका**–	२.००
२३०४	**सनातनभजनदीपिका**– श्रीसूरदास, तुलसीदास आदि के, धर्मसभाओं आदि में गाने लायक चुने हुए भजनों का अनूठा संग्रह।	३०.००
२३३१	**संगीत पूरनमल**– बड़ा बालकराम कृत। (जीर्ण)	
२३४०	**होली चौताल संग्रह**– भक्त भगवानदासजी संग्रहीत प्रथम भाग। बसन्त पंचमी से फाल्गुन तक गाने लायक होलियों का अपूर्व संग्रह।	३०.००

उपन्यास – हिन्दी

सूची क्र	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
२३४९	**एक मारवाड़ी की बात**– मारवाड़ी जातीय भजन सहित। (रहस्यमयी घटना) बाबू भगवतीप्रसादजी दारुका कृत अति रोचक और शिक्षाप्रद उपन्यास। (जीर्ण)	
२३५५	**गुप्तभेद**– (जासूसी उपन्यास) गोपालराम गहमर निवासी रचित। (जीर्ण)	

किस्सा –कहानी

सूची क्र	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
२४१३	**झगडा पंचक**– शिक्षारूप पांच झगडे।	३.००

बालकोपयोगी पुस्तकें

सूची क्र	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
२४८३	**स्वच्छता की प्रथम पुस्तक**– (जीर्ण)	
२४८५	**हिन्दी की पहली पुस्तक**– हिन्दी मदरसों में पढने योग्य। (जीर्ण)	
२४८६	**हिन्दी की दूसरी पुस्तक**– (जीर्ण)	
२४८७	**हिन्दी की तीसरी पुस्तक**– (जीर्ण)	

कबीरपन्थी ग्रन्थ

सूची क्र	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
२५४५	**कबीर मन्शूर**– सत्यलोकवासी स्वामी परमानन्दजी कृत उर्दू भाषात्मक मूल का रिसर्च स्कॉलर पं. माधवाचार्य कृत हिन्दी अनुवाद। कबीरपन्थी ग्रन्थों में विधर्मियों द्वारा आक्षिप्त विषयों के निवारणार्थ तथा स्तमन सिद्धान्त की रक्षा के लिये निवारक।	१०००.००
२५४६	**कबीर बीजक**– (कबीर साहब का मुख्य ग्रन्थ) – कबीरपन्थी महात्मा पूरण-साहब कबीरसाहब के समान हो गये, उन्ही महात्मा की टीका सहित।	५००.००
२५४७	**कबीरपन्थी शब्दावली**– कबीर ग्रन्थों के संग्राहक तथा जीर्णोद्धारक भारत पथिक स्वामी युगुलानन्द बिहारीजी द्वारा परिशोधित। इसमें कबीरसाहब की सात हजार से भी अधिक उपदेश भरी वाणियां हैं। पद्य में हैं, टीका सहित नहीं है।	७००.००

(कृपया मालूम करें कि– कबीरसागर के ग्यारहों भाग पद्य में हैं, टीका सहित नहीं है)

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
२५४८	**कबीरसागर**– सम्पूर्ण ११ भाग एक जिल्द में। पद्य में हैं, टीका सहित नहीं है	१२००.००
२५४९	**नं. १ कबीरसागर**–(प्रथम खण्ड)–ज्ञानसागर– (लोक–परलोक का वर्णन।) कबीरसाहब के पृथ्वीपर प्रकट होने की कथा तथा ज्ञान, वैराग्य और योग के उपदेश का भण्डार।	९०.००
२५५०	**नं. २ कबीरसागर**– (द्वितीय खण्ड)–अनुराग सागर – यह पुस्तक ३०–३५ प्रतियों द्वारा शुद्ध करके और पं. हजूर उग्रनाम साहिब के यहां की प्रति से मिलाकर छापी गयी है। स्थान स्थान पर योग्य टिप्पणी दी गई है।	१३०.००
२५५१	**नं. ३ कबीरसागर**–(तृतीय खण्ड)– अम्बुसागर, विवेकसागर और सर्वज्ञसागर –संयुक्त। (इक्कीस युगा की कथा कबीर साहिब का इक्कीसों युगों में प्रकट होकर अधिकारी जीवों को उपदेश देने और उन युगों के आश्चर्यमय स्वरूप का वर्णन) और सर्वज्ञसागर में सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन है।	१२०.००
२५५२	**नं. ४ कबीरसागर**–(चतुर्थ खण्ड)–प्रथम भाग– ज्ञानप्रकाश, अमरसिंहबोध, और वीरसिंहबोध। (कबीरसाहिब का युगयुग में पृथ्वीपर प्रकट होकर अधिकारी जीवों को बोध देकर मोक्ष प्राप्ति कराने की कथा)	१००.००
२५५३	**नं. ५ कबीरसागर**–(चतुर्थ खण्डान्तर्गत बोधसागर)–द्वितीय भाग– भोपालबोध, जगजीवनबोध, गरुडबोध, हनुमानबोध और लक्ष्मणबोध संयुक्त।	१२०.००
२५५४	**नं. ६ बोधसागर**– महंमदबोध, काफिरबोध, सुलतानबोध।	१००.००
२५५५	**नं. ७ बोधसागर**– निरंजनबोध, ज्ञानबोध, भवतारणबोध, मुक्तिबोध, चौकास्वरोदय, अलिफनामा, कबीरवानी, कर्मबोध और अमरमूल।	२००.००
२५५६	**नं. ८ बोधसागर**– उग्रगीता, ज्ञानस्थिति, सन्तोषबोध, कायापंजी और पंचमुद्रा	१७०.००
२५५७	**नं. ९ बोधसागर**– आत्मबोध, जैनधर्मबोध, स्वयंवेदबोध और धर्मबोध।	१६०.००
२५५८	**नं. १० बोधसागर**–कमालबोध, श्वासगुंजारबोध, आगमनिगमबोध, सुमिरनबोध।	२१०.००
२५५९	**नं. ११ बोधसागर**– कबीर चरित्रबोध, गुरुमाहात्म्य और जीवधर्मबोध।	२००.००
२५६१	**कबीरभजनमाला**– महंत शम्भुदासजी कृत, कबीरपन्थी उत्तमोत्तम भजनों का संग्रह।	८०.००
२५६२	**कबीरकृष्णगीता**– कृष्ण–गरुड संवाद, गरुड–शुकदेव संवाद आदि कथाओं द्वारा ज्ञानोपदेश। (दोहा, चौपाई में है, टीका सहित नहीं है।)	१००.००
२५६३	**कबीरोपासनापद्धति**– कबीरपन्थियों को सदाचार और नित्य कर्म सिखानेवाली पुस्तक। इसके समान दूसरी पुस्तक नहीं है। इसमें सुमिरण, स्तोत्र, अर्जनामा, आरजी, संज्ञा, चेतावनी, ज्ञानगूदडी, दयासागर आदि सैकडो विषय हैं। अन्त में पूरणसाहब कृत विनय के शब्द है।	१८०.००

(कृपया मालूम करें कि– कबीरसागर के ग्यारहों भाग पद्य में हैं, टीका सहित नहीं है)

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य
२५६४	**कबीरकसौटी**– इसमें कबीरसाहब का जीवनचरित्र तथा उनकी गूढ कविता और सुन्दर ज्ञानोत्पादक साखी है।	३०.००
२५६७	**कबीरउपदेश**– श्रीमहंत दीनादाससाहब की आज्ञानुसार बेगमसरायवासी ठाकुरदासजी निर्मित ज्ञानप्रकाश व मुखनिधान ग्रन्थों से उत्तमोत्तम ४१ वाणियों का संग्रह। (पद्यात्मक है, टीका सहित नहीं है।)	७०.००
२५६८	**निर्णयसार**– महात्मा पूरणदासजी कृत। वेद के सिद्धान्त से जीव ही को मायारहित होनेपर परब्रह्मरूप बताया है। वह सदा निर्लेप नित्य सुखी है। जो अज्ञानी देह ही को सब कुछ मानते है, उनके भ्रम गुरुशिष्यों के प्रश्नोत्तर से दूर किये है।	३०.००
२५७३	**राजनीतिधर्मग्रन्थ**– कबीरपन्थी साधु निर्मित। इसमें मांस मद्यादि खण्डन, अहिंसा, कर्ममार्ग, उपासना, भक्तिमार्ग, योगमार्ग, ब्रह्मज्ञान, सत्यज्ञान, रहनी और जीवमुक्त स्थिति का वर्णन है। (दोहा, चौपाई में है)	३०.००
२५७७	**शब्दावली तथा संज्ञापाठ**– पूरनसाहब कृत। कबीरपन्थीयों के नित्य नियमोपयोगी है। (पद्यात्मक है, टीका सहित नहीं है।)	
२५७८	**सत्य कबीर की साखी**– कबीरपरिचय की साखी सहित। इस ग्रन्थ में १०८ अग्र और ३५०० से भी अधिक साखियां हैं। कबीरपरिचय की साखी ३५२ हैं। (पद्य में है, टीका सहित नहीं है।)	२५०.००
२५७९	**सत्यनाम कबीरपन्थी– बालोपदेश**– अर्थात् सद्गुरु कबीरसाहब के सात ककहरों में से ३ ककहरों का संग्रह। (पद्य में है, टीका सहित नहीं है।)	१०.००
२५८१	**सखुनबहारदर्पण**– सरलार्थ टीका सहित। कबीरपन्थी महात्मा श्रीनारायणदासजी कृत। "बीजक" आदि कठिन ग्रन्थोक्त विषयों का मर्म जानने के लिये अतीवोपयोगी ग्रन्थ।	
२५८२	**सारदर्शन**– अर्थात् कबीरसाहब कृत सार–साखियों की इन्दौर निवासी महंत शम्भूदासजी कृत टीका।	१०.००

नाथ–नानकपन्थी ग्रन्थ

२५८३	**अभिलाखसागर**– स्वामी अभिलाखदासजी कृत। इसमें वन्दनविचार, ग्रन्थविचार, मार्गविचार, भजनविचार, जगब्रह्मविचार, चैतन्यब्रह्मविचार, निराकारब्रह्मविचार, मिथ्याब्रह्मविचार, अहंब्रह्मविचार, ब्रह्मविचार, वर्तमान ब्रह्मविचार, आदि विषय अच्छी रीति से वर्णित हैं।	२००.००
२५८८	**नानकादि गुरुस्तोत्र** –	

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य

मारवाडी भाषा के ख्याल आदि

२६३३ **राजा चित्रमुकुट का ख्याल**- (जीर्ण)

२६३४ **राजा नल का ख्याल**- (जीर्ण)

२६३६ **राजा रिसालू का ख्याल**- (जीर्ण)

२६५३ **सौदागर-वजीरजादी का ख्याल**- नानूलाल राणाजी कृत। (जीर्ण)

परिशिष्टांक

२६५८ **विवाहसोपांगविधि**- चूड़ामणि पं. ठाकुरप्रसादजी मणि वैद्य त्रिपाठी विरचित तथा उनके आत्मज पं. लक्ष्मीकान्तजी मणि वैद्यक कृत "बालबोधिनी" नामक हिन्दी टीका सहित। २००.००

२६६६ **सोलह सोमवार व्रतकथा**- इसमें शंकरजी का पूजन विधान, शंकराचार्य विरचित "शिवपञ्चाक्षरस्तोत्र" और सोलह सोमवार का विधान। केवल हिन्दी भाषा में उसकी कथा एवं उद्यापनविधि भलीभान्ति वर्णित है। ४०.००

२६७० **आदर्शराम**- दार्शनिक सार्वभौम स्वामी श्री. माधवाचार्यजी द्वारा लिखित मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्री रामचन्द्रजी के आदर्श चरित्र का संक्षेप में सारगर्भित सुगम वर्णन। ८.००

२६७१ **गीता**- (राजस्थानी पद्यानुवाद) -अनुवाद कर्ता-हिन्दी व राजस्थानी भाषा के सुपरिचित कवि श्री. विश्वनाथजी "विमलेश"। अध्यात्मवाद जैसे गूढ़ातिगूढ़ विषय का जिस सरल और बोलचाल की भाषा में सही ढ़ंग से प्रतिपादन हुआ है, देखकर आप मुग्ध हुए बिना न रहेंगे। मूल श्लोकों सहित।

२६७२ **गीता**- (राजस्थानी पद्यानुवाद)- मूल श्लोकों के बिना अनुवाद मात्र।

२६७७ **अग्ररामायण**- लेखिका सीतादेवी पुरुषोत्तम पोद्दार। रामायण की कथा सुबोध व सरल सम्वाद, रोचक तथा भावगम्य शैली में लिखी गयी है। नैच्युरल शेडवाले मैपलिथो कागजपर रंगीन स्याही में नयनाभिराम छपायी, नयनमनोहर, बहुरंगी चित्रयुक्त आकर्षक मुखपृष्ठ, लेमिनेटेड आवरण सहित। ११०.००

पं. हरिप्रसाद भागीरथी पुस्तकालय की पुस्तकें

(ये पुस्तकें अधिक जीर्ण हैं - कृपया ग्राहकगण मंगाते समय ध्यान रखें।)

९ **कनकसुन्दरी**- (जीर्ण)

१८ **द्रौपदी की बारामासी**- (जीर्ण)

२० **नरहरिविलास**- ज्योतिष। (जीर्ण)

हमारा एक अनुपम प्रकाशन.....

आधुनिक परिवेश में भारतीय संस्कृति

- डॉ. शिवकुमार ओझा

पुस्तक का विषय भारतीय संस्कृति का इतिहास नहीं, ज्ञान है-

प्रस्तुत पुस्तक में मनुष्य को अभ्युदय एवम् निःश्रेयस की प्राप्ति कराने वाले विचार हैं अर्थात् वह ज्ञान है जिसके आश्रय से मनुष्य सुखी शिष्ट लौकिक जीवन व्यतीत करता हुआ जीवन का सर्वोत्तम कल्याणकारी शिखर प्राप्त करें।

विद्वान् लेखक डॉ. शिवकुमार ओझाजी की प्रारम्भिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के भिन्न-भिन्न स्थानों में हुई तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से गणित में M.Sc. की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् आप ''इंडियन इंस्टीट्यूट ओफ साइंस'' बँगलोर चले गये जहां से ''वायु-आकाश प्रौद्योगिकी'' (एयरोस्पेस इंजीनियरिंग) विभाग में वायुगतिकी (एयरोडाइनेमिक्स) क्षेत्र में Ph.D. की उपाधि प्राप्त की तथा वहीं पर प्रवक्ता (Lecturer) के रूप में नियुक्त हो गये। सन् १९६७ से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.) बम्बई (मुम्बई) के एयरोस्पेस इंजीनियरिंग विभाग में पहले असिस्टेंट प्रोफेसर तथा फिर प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहे। इस कार्यकाल में आपने विभिन्न शैक्षिक एवम् प्रशासनिक दायित्वों का निर्वाह किया, विदेश यात्राएँ कीं तथा वहाँ अध्यापन कार्य भी किया। आपने "FLIGHT PERFORMANCE OF AIRCRAFT" नामक पुस्तक (लगभग ५३० पृष्ठों वाली) भी विद्यार्थियों के लिये लिखी, जिसे U.S.A. के एक प्रसिद्ध प्रकाशक AIAA (American Institute Of Aeronautics And Astronautics) ने छापी। सन् १९९५ में आप आई. आई. टी. बम्बई से सेवानिवृत्त हो गये।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् आपकी रुचि ''भारतीय संस्कृति'' विषय के प्रति अधिक बढ़ी और अध्ययन व अध्यापन का क्षेत्र भारतीय संस्कृति हो गया। आपके प्रयत्नों से यह विषय आई. आई. टी. बम्बई में शैक्षिक सत्र सन् २००२-२००३ से प्रारम्भ कर दिया। आजकल प्रायः यह माना जाता है कि आधुनिक शिक्षित मनुष्य को भारतीय संस्कृति समझने में अधिक रुचि नहीं है। ओझाजी आधुनिक समय के उच्च शिक्षा प्राप्त वैज्ञानिक हैं। इसलिये एक आधुनिक वैज्ञानिक का भारतीय संस्कृति के प्रति क्या दृष्टिकोण हो सकता है, इस का अवलोकन स्पष्टरूप से पाठकगण इस पुस्तक में करेंगे। परंपरागत रूप से चले आ रहे प्रामाणिक ग्रंथों का आधार बनाकर पुस्तक

सूची क्र.	पुस्तक का नाम	सूची मूल्य

मारवाडी भाषा के ख्याल आदि

२६३३ राजा चित्रमुकुट का ख्याल- (जीर्ण)

२६३४ राजा नल का ख्याल- (जीर्ण)

२६३६ राजा रिसालू का ख्याल- (जीर्ण)

२६५३ सौदागर-वजीरजादी का ख्याल- नानूलाल राणाजी कृत। (जीर्ण)

परिशिष्टांक

२६५८ **विवाहसोपांगविधि**- चूड़ामणि पं. ठाकुरप्रसादजी मणि वैद्य त्रिपाठी विरचित तथा उनके आत्मज पं. लक्ष्मीकान्तजी मणि वैद्यक कृत "बालबोधिनी" नामक हिन्दी टीका सहित। २००.००

२६६६ **सोलह सोमवार व्रतकथा**- इसमें शंकरजी का पूजन विधान, शंकराचार्य विरचित "शिवपञ्चाक्षरस्तोत्र" और सोलह सोमवार का विधान। केवल हिन्दी भाषा में उसकी कथा एवं उद्यापनविधि भलीभान्ति वर्णित है। ४०.००

२६७० **आदर्शराम**- दार्शनिक सार्वभौम स्वामी श्री. माधवाचार्यजी द्वारा लिखित मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्री रामचन्द्रजी के आदर्श चरित्र का संक्षेप में सारगर्भित सुगम वर्णन। ८.००

२६७१ **गीता**- (राजस्थानी पद्यानुवाद) -अनुवाद कर्ता-हिन्दी व राजस्थानी भाषा के सुपरिचित कवि श्री. विश्वनाथजी "विमलेश"। अध्यात्मवाद जैसे गूढ़ातिगूढ़ विषय का जिस सरल और बोलचाल की भाषा में सही ढ़ंग से प्रतिपादन हुआ है, देखकर आप मुग्ध हुए बिना न रहेंगे। मूल श्लोकों सहित।

२६७२ **गीता**- (राजस्थानी पद्यानुवाद)- मूल श्लोकों के बिना अनुवाद मात्र।

२६७७ **अग्ररामायण**- लेखिका सीतादेवी पुरुषोत्तम पोद्दार। रामायण की कथा सुबोध व सरल सम्वाद, रोचक तथा भावगम्य शैली में लिखी गयी है। नैच्युरल शेडवाले मैपलिथो कागजपर रंगीन स्याही में नयनाभिराम छपायी, नयनमनोहर, बहुरंगी चित्रयुक्त आकर्षक मुखपृष्ठ, लेमिनेटेड आवरण सहित। ११०.००

पं. हरिप्रसाद भागीरथी पुस्तकालय की पुस्तकें

(ये पुस्तकें अधिक जीर्ण हैं - कृपया ग्राहकगण मंगाते समय ध्यान रखें।)

९ **कनकसुन्दरी**- (जीर्ण)

१८ **द्रौपदी की बारामासी**- (जीर्ण)

२० **नरहरिविलास**- ज्योतिष। (जीर्ण)

हमारा एक अनुपम प्रकाशन.....

आधुनिक परिवेश में भारतीय संस्कृति

– डॉ. शिवकुमार ओझा

आधुनिक परिवेश
में
भारतीय संस्कृति

डॉ. शिवकुमार ओझा

पुस्तक का विषय भारतीय संस्कृति का इतिहास नहीं, ज्ञान है–

प्रस्तुत पुस्तक में मनुष्य को अभ्युदय एवम् निःश्रेयस की प्राप्ति कराने वाले विचार हैं अर्थात् वह ज्ञान है जिसके आश्रय से मनुष्य सुखी शिष्ट लौकिक जीवन व्यतीत करता हुआ जीवन का सर्वोत्तम कल्याणकारी शिखर प्राप्त करें।

विद्वान् लेखक डॉ. शिवकुमार ओझाजी की प्रारम्भिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के भिन्न–भिन्न स्थानों में हुई तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से गणित में M.Sc. की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् आप ''इंडियन इंस्टीट्यूट ओफ साइंस'' बँगलोर चले गये जहां से ''वायु–आकाश प्रौद्योगिकी'' (एयरोस्पेस इंजीनियरिंग) विभाग में वायुगतिकी (एयरोडाइनेमिक्स) क्षेत्र में Ph.D. की उपाधि प्राप्त की तथा वहीं पर प्रवक्ता (Lecturer) के रूप में नियुक्त हो गये। सन् १९६७ से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.) बम्बई (मुम्बई) के एयरोस्पेस इंजीनियरिंग विभाग में पहले असिस्टेंट प्रोफेसर तथा फिर प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहे। इस कार्यकाल में आपने विभिन्न शैक्षिक एवम् प्रशासनिक दायित्वों का निर्वाह किया, विदेश यात्राएँ कीं तथा वहाँ अध्यापन कार्य भी किया। आपने "FLIGHT PERFORMANCE OF AIRCRAFT" नामक पुस्तक (लगभग ५३० पृष्ठों वाली) भी विद्यार्थियों के लिये लिखी, जिसे U.S.A. के एक प्रसिद्ध प्रकाशक AIAA (American Institute Of Aeronautics And Astronautics) ने छापी। सन् १९९५ में आप आई. आई. टी. बम्बई से सेवानिवृत्त हो गये।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् आपकी रुचि ''भारतीय संस्कृति'' विषय के प्रति अधिक बढ़ी और अध्ययन व अध्यापन का क्षेत्र भारतीय संस्कृति हो गया। आपके प्रयत्नों से यह विषय आई. आई. टी. बम्बई में शैक्षिक सत्र सन् २००२–२००३ से प्रारम्भ कर दिया। आजकल प्रायः यह माना जाता है कि आधुनिक शिक्षित मनुष्य को भारतीय संस्कृति समझने में अधिक रुचि नहीं है। ओझाजी आधुनिक समय के उच्च शिक्षा प्राप्त वैज्ञानिक हैं। इसलिये एक आधुनिक वैज्ञानिक का भारतीय संस्कृति के प्रति क्या दृष्टिकोण हो सकता है, इस का अवलोकन स्पष्टरूप से पाठकगण इस पुस्तक में करेंगे। परंपरागत रूप से चले आ रहे प्रामाणिक ग्रंथों का आधार बनाकर पुस्तक

की रचना की गयी है। प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न स्थलों पर भारतीय संस्कृति के सूक्ष्म तत्वों का विवेचन किया है, जिससे आधुनिक(भौतिक) संस्कृति में व्याप्त असारता व भारतीय संस्कृति की शाश्वत महत्ता का दिग्दर्शन होता है। कुल पृष्ठसंख्या-५५२, साईज-११"X८"। मूल्य केवल-५०० रूपये मात्र रखा गया है। कमीशन काटकर ४५० रूपये नेट-डाक खर्च मुफ्त।

Our Bankers :
Punjab National Bank Opera House Branch, Mumbai 400004, Account No : 0067008700005753, IFSC Code : PUNB0006700